ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज की ब्रह्मभोज योजना

लक्ष्य : जन्मशताब्दी वर्ष 2026 तक 1,00,000 लोगों तक प्रज्ञा अभियान पहुँचाना। विस्तृत जानकारी पृष्ठ 5 पर पढ़ें।

सम्पादकीय
परिवार में संवाद बढ़े, संवदेनाएँ जगें, संस्कारों का महत्त्व समझा जाये 2

7

विदेश समाचार
ब्रिटेन की संसद में शान्तिकुञ्ज ने प्रस्तुत किए युगऋषि के विचार

शताब्दी वर्ष-2026

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 सितम्बर 2025

वर्ष : 38, अंक : 05
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 अगस्त 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-9

अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलते हुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।

नीति का स्थायी महत्त्व है, सफलता का अस्थाई
नीति पर चलते हुए परिस्थितिवश असफलता मिलती है तो वह भी कम गौरव की बात नहीं है। शिवाजी, राणा प्रताप, बंदा वैरागी, गुरु गोविंदसिंह, लक्ष्मीबाई, सुभाषचंद्र बोस आदि को पराजय का ही मुँह देखना पड़ा, पर उनकी वह पराजय भी विजय से अधिक महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि उन्होंने नीति का परित्याग नहीं किया। धर्म और सदाचार पर दृढ़ रहने वाले सफलता में नहीं, कर्त्तव्य पालन में प्रसन्नता अनुभव करते हैं। हमें अनीति और असफलता में से यदि एक को चुनना पड़े तो असफलता को ही पसंद करना चाहिए, अनीति को नहीं।

अनीति देखकर चुप रह जाना उचित नहीं है
अनीति का पोषण होता रहा तो वह दिन-दूनी रात-चौगुनी गति से बढ़ती रहेगी। दूसरों को अनीति से पीड़ित होते देखकर कितने ही लोग यह सोचते हैं कि जिस पर बीतेगी वह भुगतेगा, लेकिन यह भी सोचना चाहिए कि आज जो एक पर बीत रही है, वह कल अपने पर भी बीत सकती है। अनीति को चुपचाप देखते रहना ठीक नहीं है। शूरवीरों को आघात सहने का ही पुरस्कार मिलता है और वे इसी आधार पर लोक-श्रद्धा के अधिकारी बनते हैं।

सत्याग्रह में संकोच कैसा?
जिसे हम बुरा समझते हैं, उसे स्वीकार न करना सत्याग्रह है और यह किसी भी प्रियजन, संबंधी या बुजुर्ग के साथ किया जा सकता है। इसमें अनुचित या अधर्म रत्तीभर भी नहीं है। इतिहास में ऐसे उदाहरण पग-पग पर भरे पड़े हैं। प्रह्लाद, भरत, विभीषण, बलि आदि की अवज्ञा प्रख्यात है। अर्जुन को गुरुजनों से लड़ना पड़ा था। मीरा ने पति का कहना नहीं माना था।

आदर्श यही रहना चाहिए कि अनौचित्य को हर हालत में अस्वीकार किया जाए, चाहे किसी ने भी उसके लिए कितना ही दबाव क्यों न डाला हो। नम्रतापूर्वक ऐसे अवसरों पर अपनी हठ या असहमति व्यक्त की जा सकती है। दृढ़तापूर्वक स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया जाए कि हमें किसी भी शर्त पर खर्चीला विवाहोन्माद स्वीकार नहीं। देखने भर में यह अवज्ञा है, किन्तु उसे किसी प्रकार अनुचित अथवा अधर्म नहीं कहा जा सकता।

मित्रता का धर्म मित्र का हितसाधन है
दोस्ती का मतलब मित्र को कुमार्ग से छुड़ाना है, पथ-भ्रष्ट करने के लिए घसीट ले जाना नहीं। ऐसे अवसरों पर हमारा साहस इतना प्रखर होना चाहिए कि नम्र, किंतु स्पष्ट शब्दों में इनकार कर सकें। इनकार, असहयोग, विरोध और संघर्ष इन चार शस्त्रों से हम अनीति और अविवेक का सामना कर सकते हैं। सत्य और न्याय के लिए इन शस्त्रों का प्रयोग हमें साहसी शूरवीर योद्धा की तरह करते रहना चाहिए।

दूरदर्शी दृष्टिकोण से जीवन लक्ष्य की प्राप्ति

मानव जीवन की गरिमा

मनुष्य का अवतरण-ईश्वरीय अवतार धारण का ही छोटा स्वरूप है। ईश्वर अवतार लेता है, धर्म के संस्थापन और अधर्म के निराकरण के लिए; साधुता का परित्राण और दुष्कृत्यों का शमन करने के लिए। भगवान की लीलाएँ इसी का ताना-बाना बुनने के लिए बनती और चलती हैं। अवतार निरुद्देश्य हास-विलास के लिए नहीं होते। वे अतिरिक्त ईश्वरीय शक्ति लेकर निजी मोद-प्रमोद के लिए नहीं आते, वरन् उस सामर्थ्य का उपयोग सृष्टि-सन्तुलन के लिए ही करते हैं।

मनुष्य निश्चित रूप से एक छोटा अवतार है। सृष्टि के समस्त प्राणियों की तुलना में उसे जो अतिरिक्त मिला है, उसे विशुद्ध रूप से दिव्य प्रयोजनों के लिए दी गई अमानत पूँजी ही समझा जाना चाहिए। जिस प्रकार हम अवतारी देवदूतों को असाधारण क्षमताओं से भरा-पूरा देखते हैं, ठीक उसी प्रकार जीव जगत के समस्त सदस्य मनुष्य को धरती पर विचरण करने वाली देव सम्पदा सम्पन्न सत्ता के रूप में देख-समझ सकते हैं। यह असाधारण अनुदान उसे अकारण ही नहीं मिला है। उसके पीछे निश्चित रूप से ईश्वर-प्रदत्त महान् कर्त्तव्य और महान् उत्तरदायित्व जुड़े होते हैं।

माया और उससे मुक्ति

माया उसी भ्रान्ति का नाम है, जो आत्मा के स्वरूप, कर्त्तव्य और लक्ष्य को भुला देती है तथा वासना और तृष्णा के हेय आकर्षणों में फँसा देती है। माया लोभ और मोह के भव-बन्धनों में बाँध देती है। माया के जाल-जंजाल से छुटकारा पाकर जीवन के स्वरूप, संसार के व्यक्तियों तथा पदार्थों के साथ अपने सम्बन्धों का यथार्थता के आधार पर निर्धारण करना ही मुक्ति है।

मुक्ति को परम पुरुषार्थ माना गया है। उसमें लोक-प्रवाह से उलटी दिशा में सोचने और चलने का साहसिक पराक्रम करना पड़ता है। अपना चिन्तन और कर्तृत्व लोगों के अनुकरण या परामर्श पर निर्धारित न रहने देकर विवेक भरी दूरदर्शिता के सहारे निश्चित करना पड़ता है। जो ऐसा कर सके, समझना चाहिए कि वह जीवित रहते हुए भी मोक्ष का महान् अनुदान प्राप्त कर सकने में सफल हो गए।

आमतौर से लोगों का सारा चिन्तन, सारा कर्तृत्व शरीर और मन की आकांक्षाएँ पूरी करने में ही लगता है। लोग पेट और प्रजनन के लिए ही जीते हैं। उन्हें इन्द्रियजन्य वासनाओं की पूर्ति और मनोगत तृष्णाओं को जुटाने के अतिरिक्त और कुछ सूझता ही नहीं। आकांक्षा की धुरी लोभ और मोह के पहियों के सहारे ही घूमती है। यही है मानव जीवन का घृणित और भ्रमित स्वरूप। इसका दुष्परिणाम जीवन-काल में हर घड़ी भुगतना पड़ता है। शोक-संताप, अभाव, दारिद्र्य, क्लेश-कलह की ठोकरें पग-पग पर लगती हैं। शरीर को रोग और मन को उद्वेग घेरे रहते हैं। जिनको सुखी बनाने की बात सोची

गई थी, वे भी क्षणिक लिप्सा की ललक में पाते कम और खोते बहुत हैं। भोग भोगने की लिप्साएँ तो पूरी नहीं हो पातीं, उलटे स्वयं ही जरा-जर्जर होकर रोते-कलपते, जलते-गलते रहते हैं। माया का, भ्रमग्रस्तता का यही स्वाभाविक परिणाम है, जिसे दुनियादार लोग शोक-सन्ताप ग्रसित होकर निरन्तर सहन करते रहते हैं। सुख की आशा करते चलते जरूर हैं, पर दुःख-निराशा के अतिरिक्त और कुछ हाथ लगता नहीं। यही है मायाग्रस्त जीवन का निरूपण और विश्लेषण।

जीवन की भूल भुलैया

समाज के प्रति हर मनुष्य का प्रचण्ड कर्त्तव्य है। वस्तुतः इसी के लिए मनुष्य का जन्म हुआ है। उसे संसार को सुखी, समुन्नत और सुन्दर बनाने के लिए अपनी अधिकाधिक क्षमताएँ और विभूतियाँ लगानी चाहिए। यही तो मानव-जीवन के दिव्य अवतरण का एकमात्र उद्देश्य है। पर होता यह है कि इन्द्रियजन्य लिप्सा, वासना, मनोगत अहंता, तृष्णा की पूर्ति में ही अधिकांश क्षमता समाप्त हो जाती है। रही-बची परिवार की संख्या बढ़ाने और उन्हें अमीर उमराव स्तर का बनाने के लिए ताना-बाना बुनने में चुक जाती है। शारीरिक श्रम, मानसिक चिन्तन एवं आर्थिक उपार्जन से जो कुछ मिलता है वह शरीर, मन और परिवार के लिए ही कम पड़ता है। अभाव अनुभव होता रहता है और अधिक कमाकर उसकी पूर्ति की उद्विग्नता छाई रहती है। ऐसी दशा में जीवनोद्देश्य की पूर्ति के लिए, लोकमंगल के लिए कुछ करना सम्भव ही नहीं हो पाता है।

इस विडम्बना ग्रस्त जीवन जंजाल में अन्तरात्मा के मनोस्थल सदा कराहते रहते हैं। मनुष्य अपने आपको खोया-खोया सा, किंकर्त्तव्यविमूढ़ सा अनुभव करता है। निर्वाह के आवश्यक साधन रहते हुए भी ऐसा लगता है मानो वह मरघट में रहकर अशान्त जीवन जी रहा हो। उसे न कहीं चैन है, न शान्ति, न सन्तोष। छोटे-छोटे कारणों के सहारे बेहिसाब खीझ और बेचैनी उठती रहती है। भीतर ही भीतर कोई काटता, कचोटता रहता है, जिसकी प्रतिक्रिया बाहरी जीवन में पग-पग पर झल्लाहट के रूप में प्रकट होती है।

मायाग्रस्त जीवन की यही दुःखद प्रतिक्रिया है। इस अन्तर्व्यथा से बचने के लिए कितने ही लोग ग़म ग़लत करने के लिए नशे पीते हैं, कभी भड़काने वाले मनोरंजन गृहों के चक्कर काटते हैं, कभी घर छोड़कर तीर्थयात्रा, सैर-सपाटे के लिए निकलते हैं, कभी ताश, शतरंज जैसे व्यसनों में भीतरी कसक को भुलाने का प्रयत्न करते हैं, पर वे सभी साधन मृगतृष्णावत् लगते हैं।

आत्मवादी जीवन दर्शन

हम भ्रान्तियों से भरा-पूरा मायाग्रस्त जीवन जीते हैं। शरीर, मन, परिवार, समाज, भगवान किसी के भी प्रति हमारा दृष्टिकोण सही नहीं है। किसी भी क्षेत्र में सही रीति-नीति नहीं अपनाई जा सकी, इसका एकमात्र कारण आत्मा और संसार के साथ अपने संबंधों को ठीक तरह न समझ पाना ही है। इस भ्रान्ति को सुधारना, मायाग्रस्त मनःस्थिति को बदलना और लोक-व्यवहार की रीति-नीति का पुनर्निर्धारण करना, यही है अध्यात्म दर्शन का उद्देश्य। इसे जितना प्राप्त किया जा सके, उतना ही सुख-शान्ति का जीवन जिया जा सकता है।

(अखण्ड ज्योति, सितम्बर 1974, पृष्ठ 11-12)

जन्मशताब्दी वर्ष का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण अभियान है परिवार निर्माण की स्वस्थ परम्पराओं का पुनर्जीवन

परिवार में संवाद बढ़े, संवेदनाएँ जगें, संस्कारों का महत्त्व समझा जाये

गत, 16 अगस्त 2025 के संपादकीय आलेख में परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी की परिवार निर्माण की परम्परा की ओर ध्यानाकर्षित किया गया था। बताया गया था कि जब ऋषि भगीरथ ने स्वर्ग में बहने वाली माँ गंगा को धरती पर अवतरित करने के लिए सहमत कर लिया, तब एक यक्ष प्रश्न खड़ा हुआ था कि धरती माता स्वर्ग से अवतरित होने वाली गंगा के वेग को क्या सह पायेंगी? तब ऋषि भगीरथ ने शिवजी को प्रसन्न किया। शिवजी ने माँ गंगा को अपनी जटाओं में धारण करने के बाद उसे संतुलित वेग के साथ धरती पर प्रवाहित किया था।

वर्तमान समय में प्रज्ञावतार परम पूज्य गुरुदेव के प्रचण्ड तपोबल से युग बदलेगा, सतयुग की वापसी होकर ही रहेगी, मानव में देवत्व उभरेगा और धरती पर दिव्य विचारों से सम्पन्न देव परिवारों के रूप में स्वर्ग का सृजन होता चला जायेगा।

परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी द्वारा 'यज्ञ पिता, गायत्री माता' की घर-घर प्रतिष्ठा से यह अभियान आरंभ हुआ था। जगत् जननी परम वंदनीया माताजी के ममत्व और शक्ति अनुदानों के प्रभाव से यह अभियान विराट रूप लेता चला गया। आज करोड़ों देवमानवों और देव परिवारों से विनिर्मित विराट अखिल विश्व गायत्री परिवार सारे विश्व का पथ प्रदर्शन करने को आतुर है।

वर्तमान समय में शान्तिकुञ्ज के मार्गदर्शन में अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान के अंतर्गत मानव में देवत्व जगाने और धरती पर स्वर्ग बसाने के विराट लक्ष्य के साथ छः प्रमुख कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। गत अंक में देव परिवारों के निर्माण की आवश्यकता, उसके दर्शन के साथ इन कार्यक्रमों का उल्लेख किया गया था। ये कार्यक्रम हैं-

1. दम्पति शिविरों का आयोजन
2. गर्भोत्सव कार्यक्रम (गर्भ संस्कार)
3. माँ की संस्कारशाला एवं बच्चों के विविध संस्कार
4. बाल संस्कार शालाएँ
5. कन्या/किशोर संस्कार शाला एवं प्रशिक्षण शिविर
6. युवा जागृति अभियान

इनका उद्देश्य आधुनिक जीवन शैली में टूटती-बिखरती परिवार व्यवस्था को बचाना है।

इन दिनों स्कूल-कॉलेज और शिक्षण संस्थानों में जीविकोपार्जन और लोक व्यवहार के लिए आवश्यक शिक्षा ही प्रमुख रूप से दी जा रही है। जीवन विद्या का मुख्य स्रोत तो हमारी परिवार व्यवस्था ही थी। आधुनिक जीवन शैली में बिखरती परिवार व्यवस्था के कारण गृहस्थ जीवन में संयम, सेवा, साधना से व्यक्तित्व को निखारने का जो अवसर लोगों को मिलना चाहिए, वह क्षीण होता जा रहा है। परम पूज्य गुरुदेव ने 'परिवार' को सद्गुणों को विकसित करने की **'प्रयोगशाला'**, गुण-कर्म-स्वभाव को उच्चस्तरीय बनाने एवं व्यक्तित्व को गौरवशाली बनाने का पाठ पढ़ाने वाली **'पाठशाला'** तथा हर दृष्टि से समर्थ बनने के लिए जीवनभर काम आने वाली विशिष्टताओं का अभ्यास करने हेतु **'व्यायामशाला'** बताया है। संयुक्त परिवारों में तो यह अवसर सहज रूप से मिला ही करता था, लेकिन ऋषि परम्परा में हमारी शिक्षा व्यवस्था भी ऐसी ही हुआ करती थी। गुरुकुलों में ज्ञानार्जन भी पारिवारिक व्यवस्थाओं के अंतर्गत हुआ करता था। हर विद्यार्थी को ज्ञानार्जन के साथ-साथ भिक्षाटन, आश्रम व्यवस्था, गुरुसेवा जैसे कार्यों में योगदान देना अनिवार्य हुआ करता था। शिक्षा में पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, जीवन साधना, स्वास्थ्य, स्वावलम्बन, आत्मरक्षा आदि जीवनोपयोगी हर विद्या को ग्रहण करना अनिवार्य हुआ करता था। इन दिनों की शिक्षा एकांगी होती जा रही है, जिसके कारण विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का समग्र विकास नहीं हो पाता।

गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे व्यक्तित्व परिष्कार और समाज निर्माण के विविध आन्दोलन आधुनिक जीवन शैली के दुष्प्रभावों से बचाने और अपनी सनातन परिवार व्यवस्था की विशेषताओं से लोगों को लाभान्वित करने के अत्यंत प्रभावशाली प्रयास हैं। इन कार्यक्रमों से लाखों, करोड़ों लोग जुड़े हैं और लाभान्वित हो रहे हैं।

वर्तमान जीवन शैली में व्यवस्थाएँ बदली हैं, परिवार छोटे हुए हैं, लेकिन ऐसा नहीं है कि अपनी प्राचीन परिवार व्यवस्था के लाभों को एकल और छोटे परिवारों में प्राप्त नहीं किया जा सकता। परम पूज्य गुरुदेव का कथन है कि मनःस्थिति बदलते ही परिस्थितियाँ बदल जाया करती हैं। आज सामाजिक व्यवस्था तो बदली ही है, लोगों की मनःस्थिति में आमूलचूल परिवर्तन हो गया है। यदि मनःस्थिति ठीक कर ली जाये तो वर्तमान परिस्थितियों में भी व्यक्तित्व एवं समाज का आदर्श और समग्र विकास किया जा सकता है।

आज की सामाजिक विसंगतियों और अवांछनीयताओं पर दृष्टि डालते हैं, तो उनके पीछे अविवेकपूर्ण चिंतन, परिवार में संवादहीनता और व्यक्तित्व विकास के लिए पर्याप्त समय एवं ध्यान न देना दिखाई देता है। यह उपेक्षा ही अवसाद, अपराध एवं आत्महत्या जैसे कृत्यों का कारण बन जाती है। कुछ उदाहरण देखें :-

माता-पिता और एक बेटी का छोटा-सा एक गरीब परिवार था। माता-पिता मजदूरी करके अपनी बेटी को पाल रहे थे। वे यथा संभव अपनी गरीबी का साया बेटी पर नहीं पड़ने देना चाहते थे। वे चाहते थे कि उनकी बेटी खूब पढ़े और जीवन में आगे बढ़ती जाये। इसके लिए वे बेटी की हर आवश्यकता पूरी करते गए। जब वह किशोरावस्था में आई तो उन स्कूल-कॉलेजों में दाखिला करा दिया, जहाँ उसे अमीर घरों के बच्चों की संगत मिली। अब वह स्वयं की तुलना अमीर बच्चों से करने लगी। देखादेखी उसकी इच्छाएँ और शान-शौकत बढ़ती गई। अब माता-पिता के लिए बेटी को अपनी सीमाओं का अहसास कराने की मजबूरी आ गई। गरीबी की बात आते ही बेटी के स्वर बदलने लगे। अमीर बच्चों की तुलना में उसे आत्महीनता सताने लगी। वह अपने माता-पिता से घृणा करने लगी। कुंठा और आत्महीनता का भाव इतना बढ़ गया कि उसने एक दिन चूहे मारने की दवा खा ली, तब बड़ी मुश्किल से उसकी जान बच पायी।

दूसरा उदाहरण अमीर माता-पिता का है। दोनों ही प्रोफेसर थे। अपार धन था, लेकिन जीवन शैली ऐसी कि उनके पास अपने बच्चे के साथ बिताने के लिए समय नहीं था। उन्होंने अपने बच्चे की किसी इच्छा पर विराम नहीं लगाया, उसकी हर इच्छा पूरी करते रहे। बड़ा हुआ तो बैंगलुरु के एक कॉलेज में भेज दिया। बेटे के शौक और आवश्यकताएँ बढ़ती ही गईं। नए शौक की जानकारी माता-पिता को दे नहीं सकता था, अतः उन्हें पूरा करने के लिए पहले सहपाठियों के सामान चुराने लगा। फिर धीरे-धीरे कॉलेज की लैब का सामान चुराकर अपनी जरूरतें पूरी करने लगा। आदतें बिगड़ती ही गईं। एक दिन उसके माता-पिता को कॉलेज की तरफ से पत्र मिला कि आपके बेटे को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है, उसे कॉलेज से निकाल दिया गया है, आप उसे आकर ले जाइये।

ऊपर की दोनों घटनाएँ बच्चों पर पारिवारिक परिस्थितियों के प्रभाव की केस स्टडी के रूप में एक पुस्तक में दर्ज हैं। दोनों ही परिस्थितियों में पाया गया कि माता-पिता और बच्चों के बीच संवादहीनता और संस्कारों का अभाव ही बच्चों के लिए संकट का कारण बना, जिसके कारण न बच्चे सुखी हुए, न उनके माता-पिता को सुख-चैन मिला।

आज के परिवारों में यही मनोदशा समाज में छूत की बीमारी की तरह सर्वत्र फैलती जा रही है। अभिभावक बच्चों के गुण, व्यवहार, संस्कारों की उपेक्षा करते और उन्हें उनकी सामर्थ्य के परे अपनी अथाह अपेक्षाओं के बोझ तले दबाते देखे जाते हैं। पढ़ाई की अंधी दौड़ में बचपन धूल धूसरित हो रहा है और अंतर्निहित प्रतिभा कुंठित हो रही है।

गायत्री परिवार का 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' अभियान समाज की इसी सोच को बदलकर हर परिवार को देव परिवार के रूप में विकसित करने का अत्यंत प्रभावशाली अभियान है। इसके अंतर्गत चलाए जा रहे कार्यक्रमों में परिवार में परस्पर संवाद बढ़ाने, संवेदनाएँ जगाने तथा संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित कर अपनी प्राचीन ऋषि परम्परा के आधार पर व्यक्तित्व को निखारने का प्रयास किया जा रहा है।

दम्पति शिविर

आधुनिकता की होड़ और फैशनवादी सोच के कारण पति-पत्नी के बीच दूरियाँ बढ़ रही हैं, जिसका दुष्परिणाम बच्चों पर स्पष्ट दिखाई देता है। विवाहों के प्रचलित स्वरूप ने पति-पत्नी के बीच के पवित्र बंधन की गौरव गरिमा ही भुला दी है। परस्पर प्रेम एवं समर्पण का भाव तिरोहित होता जा रहा है। पश्चिमी देशों के प्रभाव से स्वच्छंदता एवं निरंकुशता बढ़ रही है, विवाह संस्कार नहीं मात्र एक अनुबंध बनता जा रहा है। इस परिवर्तन के दूरगामी परिणाम अत्यंत दुःखदायी हैं।

गायत्री परिवार द्वारा जगह-जगह दम्पति शिविरों का आयोजन कर नवविवाहित युगलों को विवाह संस्कार के पवित्र अनुबंधों का स्मरण कराया जाता है, गृहस्थ जीवन की गरिमा बतायी जाती है तथा संतानोत्पादन की जिम्मेदारी कब और कैसे उठायी जानी चाहिए, इसका बोध कराया जाता है।

गर्भोत्सव संस्कार (सामूहिक पुंसवन संस्कार)

गर्भोत्सव संस्कार गर्भवती माताओं को गर्भस्थ शिशु के सर्वांगीण विकास हेतु सम्पन्न किए जाने वाले संस्कारों की वैज्ञानिकता का बोध कराने वाला कार्यक्रम है। इसमें गर्भस्थ शिशु के शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक और भावनात्मक विकास की समग्र रूपरेखा व्यवहारिक रूप से समझाई जाती है। इसके अंतर्गत गर्भवती माता को साप्ताहिक रूप से चलने वाली माँ की पाठशाला के माध्यम से गर्भ की वैज्ञानिकता के साथ उसके आहार-विहार, योग, प्राणायाम, ध्यान, दिनचर्या, आचार-विचार एवं गर्भ संवाद के बारे में विस्तृत जानकारी एवं अभ्यास बताए जाते हैं। देश के अनेक राज्यों के मेडिकल एसोसिएशंस, कॉलेज, यूनिवर्सिटी, विभिन्न संस्थाओं एवं राज्य सरकारों द्वारा गायत्री परिवार के इस कार्यक्रम को मान्यता देते हुए अपने केन्द्रों पर डॉक्टरों, नर्सों, आँगनबाड़ी कार्यकर्त्रियों और स्वास्थ्य कर्मियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है।

माँ की संस्कार शाला

संयुक्त परिवारों में बच्चे अपने माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी से रोचक, रोमांचक, ज्ञानवर्धक तथा शौर्य, साहस, सद्गुण जगाने वाली, जीवनादर्शों के प्रति आस्था जगाने वाली कथा-कहानियाँ सुना करते थे, जिनके आधार पर उनका व्यक्तित्व उत्कृष्टता के साँचे में सहज रूप से ढलता जाता था। शान्तिकुञ्ज ने इस परंपरा को पुनर्जीवित करने में माता-पिता एवं अभिभावकों का सहयोग करते हुए एक वर्ष का पाठ्यक्रम तैयार किया है। इसमें प्रतिदिन के लिए बाल निर्माण की नई-नई कहानियाँ हैं, पहेलियाँ हैं, गीत और कविताएँ हैं, महापुरुषों की जीवनियाँ हैं। यह पाठ्यक्रम हर चार सप्ताह की एक पुस्तक के रूप में पुस्तकाकार में प्रकाशित है और शान्तिकुञ्ज के युवा प्रकोष्ठ द्वारा व्हॉट्सएप (9258360962) पर ऑनलाइन भी उपलब्ध कराया जा रहा है।

बाल संस्कार शालाएँ

गायत्री परिवार से जुड़े हजारों सेवाभावी युवा और भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा से जुड़े शिक्षकगणों के सहयोग से पूरे देश में बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं। बाल संस्कार शालाएँ खेल और मनोरंजक कथा-कहानियों के साथ बच्चों के व्यक्तित्व में उदात्त आदर्शों को समाहित करने का माध्यम हैं। यह बच्चों को एकाकी जीवन के दुष्प्रभाव तथा टीवी, मोबाइल की बुरी लत से छुटकारा दिलाती हैं। आदर्शोन्मुख जीवन की प्रेरणाएँ देने वाली इन बाल संस्कार शालाओं में जाने वाले बच्चे नशा, गाली-गलौज जैसी बुरी आदतों से सहज ही बच जाते हैं और दैनंदिन जीवन में अनेक अच्छी आदतों को समाहित करते जाते हैं। **जहाँ भी यह बाल संस्कार शालाएँ चलाई जा रही हैं, वहाँ बच्चों के अभिभावक और समाज के लोग इनके बहुत श्रेष्ठ-सकारात्मक परिणाम अनुभव कर रहे हैं।**

कन्या/किशोर कौशल प्रशिक्षण शिविर

यह शिविर किशोरों को उनके जीवन लक्ष्य के विषय में जागरूक करके सद्गुणी, स्वावलंबी, संस्कारवान बनाते हैं, उनके व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों का बोध कराते हैं। यह बच्चों को दुर्व्यसनों से बचने एवं नैतिकता व राष्ट्रभक्ति का पाठ पढ़ाते हुए उन्हें स्वाध्याय, पर्यावरण संरक्षण, स्वच्छता, समाजसेवा जैसे कार्यों के लिए प्रेरित कर उनमें अपने भविष्य को उज्ज्वल बनाने व सार्थक जीवन जीने का भाव जगाते हैं।

युवा जागृति अभियान

देश-विदेश के करोड़ों युवा परम पूज्य गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित हैं। नवयुग का निर्माण हमारा संकल्प है। युवा जागृति अभियान राष्ट्रोत्थान के ऐसे ही प्रेरणादायी कार्यक्रमों का आयोजन कर ज्योति से ज्योति जलाने, हर युवा में आत्मोत्थान की हूक जगाने और समाज के उत्कर्ष के लिए समर्पित होने का भाव जगाने वाला कार्यक्रम है।

परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष में देश-विदेश में ज्योति से ज्योति जलाते हुए समाज के प्रचलित प्रवाह को पलट कर समाज को नई दिशा देने का अदम्य उत्साह है। नए-नए संकल्प उभर रहे हैं, सक्रियता को नित नयी दिशाएँ मिल रही हैं। इसी क्रम में देव परिवारों के निर्माण के नए-नए कार्यक्रम भी विकसित हो रहे हैं। हाल ही में शान्तिकुञ्ज द्वारा जन्मशताब्दी वर्ष की कार्ययोजना के अंतर्गत कुछ नए प्रयोग किये गए हैं। इनकी चर्चा क्रमशः अगले अंक में।

मध्य प्रदेश के कारागारों में बदल रहा है बंदियों का जीवन

व्यक्तित्व परिष्कार हेतु जीवन साधना शिविर शृंखला

समापन शिविर में अपने अनुभव सुनाते हुए भावविह्वल हुए बंदीगण। एक भाई ने कहा-

''गायत्री परिवार के भाई-बहिन हमारे लिए देवदूत बनकर आ रहे हैं।''

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री परिवार उज्जैन द्वारा केन्द्रीय कारागार, भैरवगढ़ में व्यक्तित्व परिष्कार शिविरों की शृंखला चलाई गई। 15 बार व्यक्तित्व परिष्कार शिविरों के आयोजन के बाद दिनांक 31 जुलाई को शिविर शृंखला का समापन कारागार में विशाल दीपयज्ञ के साथ हुआ।

इस अवसर पर बंदी भाइयों ने अपने अनुभव सुनाए। एक बंदी भाई ने अत्यंत भावविह्वल होते हुए कहा, ''गायत्री मंत्र की दीक्षा मिलने का तो हमने जीवन में कभी सोचा भी नहीं था। शिविर में प्रशिक्षण देने वाले भाई-बहिन हमारे लिए देवदूत बनकर आ रहे हैं। योगाभ्यास करवाने वाले भाई तो साक्षात पतंजली ऋषि बन कर हमें योगाभ्यास करवा रहे हैं।'' एक अन्य बंदी भाई ने कहा, 'हमारे जीवन के कठिन समय में गायत्री परिवार ने कारागार के अंदर शिविर लगाकर हमारे जीवन को समुन्नत बनाने का अवसर दिया है।''

दीपयज्ञ में पाँच बन्दी भाईयों ने गायत्री मंत्र की दीक्षा ग्रहण की। प्रशिक्षण शृंखला के बीच सभी बंदी भाईयों ने गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाओं में पूर्ण श्रद्धा के साथ लेखन किया एवं शिविर के अवसर पर, महीने भर में लिखी पुस्तिकाएँ हर बार गायत्री परिजनों के पास जमा करवाईं।

दीपयज्ञ एवं अन्य कार्यक्रमों का संचालन श्रीमती आशा सेन, श्रीमती रेखा गौड़, श्रीमती रश्मि मिश्रा, श्रीमती कामिनी जुनेजा, डॉ. श्रीमती नीति टंडन इत्यादि निष्ठावान बहिनों ने किया।

समापन शिविर में दीपयज्ञ का संचालन करती गायत्री परिवार की बहिनों की टोली

प्रज्ञा परिवार के अनेक सेवाभावी परिजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ।

केन्द्रीय कारागारों में कार्यशाला — नशे से दूरी, है जरूरी

बड़वानी में आयोजित कार्यक्रम में झलकता बंदियों का उत्साह

मध्य प्रदेश, पुलिस प्रशासन के द्वारा 'नशामुक्त मध्य प्रदेश' संकल्प के साथ दिनांक 15 से 30 जुलाई तक 'नशे से दूरी, है जरूरी' जन-जागरूकता अभियान चलाया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार ने इसे अपने 'नशामुक्त भारत' के संकल्प के साथ जोड़ते हुए इस अभियान की सफलता में अग्रणी योगदान दिया। अभियान के समापन दिवस-30 जुलाई को पुलिस प्रशासन द्वारा विभिन्न कारागारों में विशेष कार्यक्रमों का आयोजन किया गया था।

बड़वानी। मध्य प्रदेश

बड़वानी जिले के केन्द्रीय कारागार में पुलिस प्रशासन एवं गायत्री परिवार के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 30 जुलाई को पुलिस अधीक्षक श्री जगदीश डाबर जी के नेतृत्व में विशिष्ट कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस कार्यशाला से प्रेरित होकर बन्दी भाईयों ने 'हम जागेंगे-युग जागेगा, हम सुधरेंगे युग सुधरेगा' का उद्घोष किया तथा आत्मविकास एवं सामाजिक जागरण के मार्ग पर चलने का प्रण लिया।

इस अवसर पर जेल अधीक्षक, सुश्री शेफाली तिवारी ने भी प्रेरणाप्रद संदेश दिया। कारागार एस. डी.ओ.पी. ने सैकड़ों बंदियों को नशा छुड़वाने की शपथ दिलवाई। **गायत्री परिवार के जिला समन्वयक श्री महेन्द्र भावसार ने कहा, ''क्रोध और नशा, दोनों ही अपराध का कारण बनते हैं।''** गायत्री परिवार की बहिन ममता तोमर ने भी बन्दी भाईयों को प्रेरक मार्गदर्शन प्रदान किया।

> ''यदि नशा ही करना है तो अच्छा इन्सान बनने का, उच्च शिक्षा प्राप्त करने का, समाज सुधार का, धन-अर्जन का नशा अपने भीतर पैदा करें। शराब, तम्बाकू, गुटखा, सिगरेट जैसे व्यसनों से व्यक्ति के सोचने-समझने की शक्ति खत्म हो जाती है और जीवन नरक़ बन जाता है।''
>
> **- श्री अफज़ल मंसूरी (पूर्व सदर)**
> बड़वानी की कार्यशाला के मुख्य अतिथि

कार्यक्रम के अंत में जेल सहायक श्री विनय काबरा ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर थाना प्रभारी एवं निरीक्षक श्री दिनेश सिंह कुशवाह, साइबर सेल एक्सपर्ट श्री रितेश खत्री, पुलिस जनसंपर्क अधिकारी श्री असद खान के साथ पुलिस प्रशासन के अनेक अधिकारी एवं गायत्री परिवार के सेवाभावी परिजनों की विशेष उपस्थिति रही।

गायत्री परिवार का सम्मान

कारागारों में आयोजित इन कार्यक्रमों में सहयोग करने वाली संस्थाओं और विशिष्ट योगदान देने वाली विभूतियों को सम्मानित किया गया। जगह-जगह गायत्री परिवार के परिजनों को भी पुलिस प्रशासन द्वारा सम्मानित किया गया।

बड़वानी में माननीय पुलिस अधीक्षक, श्री जगदीश डाबर जी ने गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ के जिला समन्वयक श्री लखन विश्वकर्मा को सम्मानित किया।

शाजापुर में 30 जुलाई को गाँधी हॉल में जिला पुलिस अधीक्षक के द्वारा एक भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इस अवसर पर गायत्री परिवार के श्री प्रदीप कुमार जायसवाल को सम्मानित किया गया।

बायें बड़वानी में श्री लखन विश्वकर्मा और दायें शाजापुर में श्री प्रदीप कुमार प्रशासन से सम्मान ग्रहण करते हुए

सरकारी तंत्र के सहयोग से आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी अभियान को मिली गति

भीलवाड़ा। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ भीलवाड़ा के अथक प्रयास और स्वास्थ्य एवं बाल विकास परियोजना विभाग के सहयोग से भीलवाड़ा में 'आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी' विषय पर एक कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्वास्थ्य एवं बाल विकास परियोजनाओं के पर्यवेक्षक, स्वास्थ्य कार्यकर्त्ता, आशा एवं आँगनबाड़ी कार्यकर्त्री बहिनें, आईसीडीएस एवं एएनएम सिस्टर्स तथा गर्भवती बहिनें उपस्थित हुईं। गायत्री परिवार की श्रीमती सरोजना व्यास ने उन्हें पुंसवन संस्कार का महत्त्व बताया तथा कार्यक्रम में उपस्थित समस्त गर्भवती बहिनों का पुंसवन संस्कार किया।

कार्यशाला में भाग लेती महिला एवं बाल विकास की विविध परियोजनाओं से जुड़ी बहिनें

इस अवसर पर स्थानीय विधायक श्री गोपी चंद मीणा जी भी उपस्थित हुए। उन्होंने पीपीटी के माध्यम से दिये गए प्रशिक्षण की मुक्त कंठ से सराहना की। उन्होंने गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे सेवा कार्यों की भी प्रशंसा की तथा गर्भवती बहिनों के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने इस प्रकार के आयोजनों हेतु हर प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन दिया।

श्रीयुत् श्रीकांत व्यास के अथक प्रयास एवं निष्ठावान गायत्री परिजनों के सहयोग से यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

नवयुग के प्रेरणादीप

अखण्ड ज्योति ने जीवन में किया क्रान्तिकारी बदलाव

युग चेतना तीर्थ, ज्योतिकुञ्ज, परशुरामपुर, बस्ती (उ.प्र.) के संचालक **श्री अजय विश्वकर्मा** के जीवन में आए परिवर्तन की कहानी, स्वयं की जुबानी

सन् 2018 में जून महीने की बात है। मैं प्राइवेट शिक्षक के रूप में कक्षा 9वीं के 50-55 बच्चों को कोचिंग पढ़ा रहा था। कोचिंग समाप्त होने पर मुझे अपनी साइकिल से बाँयी ओर मुड़कर घर जाना था, लेकिन अनायास ही मैं दायीं ओर मुड़कर एक गायत्री परिजन के घर पहुँच गया। उन्होंने मेरा स्वागत किया, जलपान के लिए पूछा। फिर उन्होंने एक बॉक्स निकाला, जिसमें अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ थीं। उन्होंने कहा, **''गुरुदेव का आदेश है कि आपको पत्रिकाएँ दे दी जायें।''** यह अक्षरशः उनके ही शब्द हैं, जो मैंने अपनी डायरी में नोट करके रखे हैं। वे शिक्षक थे, इसलिए मुझे भ्रम हुआ कि वे स्वयं को गुरुदेव कह रहे हैं।

हमने अनमने मन से ही अखण्ड ज्योति उठाई और पढ़ना आरंभ किया। उसमें इतनी रुचि पैदा हुई कि कभी पेड़ पर बैठकर, तो कभी छत पर, कभी घर में यहाँ-वहाँ बैठकर मैंने लगातार 40 अखण्ड ज्योति पढ़ डालीं। अखण्ड ज्योति पत्रिकाएँ पढ़ने के बाद मैंने इंटरनेट पर 'पं. श्रीराम शर्मा आचार्य' सर्च किया, तो उनका 'बोओ और काटो' प्रवचन आया। **प्रवचन हमने कितना सुना, यह तो नहीं पता, बस आँखों से अश्रुधारा बहती रही, यह हमें याद है।** इसके बाद आदरणीय चिन्मय भैया के वीडियो सुनना आरंभ किया। बस गुरुदेव की अखण्ड ज्योति और आदरणीय भैया के वीडियो सुनकर हमने अपनी सारी कार्य योजना बनाई, कई वर्षों तक गायत्री परिवार के किसी शक्तिपीठ, शाखा, परिजन से हमारा कोई संपर्क नहीं हुआ।

ज्योति कुंज में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री आशीष सिंह के संग के समर्पित कार्यकर्त्ताओं की टोली

हमने गुरुदेव के निर्देशानुसार ध्यान, यज्ञ, गायत्री उपासना, साधना, सुविचार, स्वाध्याय आदि को जीवन में उतारना आरंभ किया और उसके क्रांतिकारी परिणाम हमें मिलते गए। प्रातः 3.30 बजे उठने लगा। बच्चों को हम पढ़ाते ही थे, उन्हें भी यह शिक्षाएँ देना आरंभ किया। क्रमशः सहयोगी बढ़ते गए। आज हमारी 14 बाल संस्कार शालाएँ चल रही हैं, जिनमें 550 बच्चे भाग लेते हैं। इन बाल संस्कार शालाओं के माध्यम से उनके व्यक्तित्व विकास का हमारा लक्ष्य भलीभाँति पूरा हो रहा है।

14 आदर्श बाल संस्कार शालाएँ

कुछ बातें हैं जो हमारी बाल संस्कार शाला के बच्चे पूरी नियमितता और निष्ठा के साथ करते हैं। सभी के लिए स्वाध्याय करना अनिवार्य है। बच्चों ने पिछले 7-8 वर्षों से बाहर के खाद्य पदार्थ नमकीन, कुरकुरे, बिस्किट, समोसे आदि सब बंद कर दिये हैं। बच्चों को परिवारी जनों से जो भी पैसे भेंट में मिलते हैं, वे उन्हें मिशन के लिए दान कर देते हैं।

सफलता का आधार प्रामाणिकता, चरित्रनिष्ठा, परमार्थपरायणता

यह सफलता आश्चर्यजनक लगती है, लेकिन हमने अपनी प्रामाणिकता के आधार पर यह उपलब्धि हासिल की है। 150 बच्चों को कोचिंग देते थे, लेकिन कभी किसी से कुछ माँगा नहीं। जो कहा, सो किया। कथनी-करनी में कभी भेद नहीं रखा। हमारे पढ़ाये बच्चे हर क्षेत्र में गए हैं और अच्छी सफलता प्राप्त कर रहे हैं। व्यक्तिगत उपार्जन की कभी सोची नहीं, सभी के सहयोग से ज्योतिकुञ्ज द्वारा अनेक गतिविधियाँ चलाई जा रही हैं, यह गुरुकृपा का ही प्रभाव है।

युग चेतना तीर्थ ज्योतिकुंज की गतिविधियाँ

व्यक्तित्व विकास कार्यशालाएँ : पिछले एक वर्ष से हर रविवार को चलाई जा रही हैं। इनके माध्यम से कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। कर्मकाण्ड, ढपली, प्रज्ञागीतों का प्रशिक्षण।

51,000 वृक्षारोपण : हर वर्ष वर्षा ऋतु में बच्चों के सहयोग से वृक्षारोपण करते हैं। पिछले वर्ष 30,000 पौधे लगाए थे। इस वर्ष 51,000 पौधे लगाने का संकल्प है। आम, नीम, जामुन, पपीता आदि वृक्षों की पौध भी बच्चों के सहयोग से ही तैयार की गई है। बच्चे और उनके अभिभावक ही लगाए गए वृक्षों की पौध का संरक्षण भी करते हैं।

दैनिक यज्ञ एवं साधना : नित्य 108 गायत्री महामंत्र की आहुतियों के साथ दो स्थानों पर यज्ञ होता है। नवरात्रि में अखण्ड जप होता है। सभी कार्यकर्त्ता, विद्यार्थियों द्वारा नियमित गायत्री उपासना। 10 हजार कॉपी से भी ज्यादा मंत्र लेखन हुआ। ग्रीष्मावकाश में विशेष साधना सत्रों का आयोजन।

प्रज्ञा अभियान की सदस्यता/नवीनीकरण के लिए बैंक खाता विवरण : SHRI VEDMATA GAYATRI TRUST (TMD) SBI AC : 306 3160 6578 (11 Digit) IFSC : SBIN0010588
इस बैंक अकाउंट में धनराशि जमा कराकर ट्रांस्फर प्रूफ और अपना पता पिनकोड व मोबाइल नंबर सहित व्हॉट्सएप : 9258369725 पर अथवा pragyaabhiyan@awgp.org पर भेज दें।

गायत्री परिवार द्वारा हर क्षेत्र में बड़े स्तर पर किया गया वृक्षारोपण

अश्वमेध उपवन में रोपी 1300 वृक्षों की पौध

टिटवाला। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार, टिटवाला के द्वारा अश्वमेध उपवन में दिनांक 27 जुलाई को सामूहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। आयोजन में 550 परिजनों ने भाग लिया। सभी ने सामूहिक रूप से 1300 पौधों का रोपण किया। इस अभियान में सभी आयु वर्ग के परिजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी ने उपवन की मिट्टी को हाथ में लेकर संकल्प लिया कि जब तक हमारा जीवन है, तब तक हर जन्मदिवस पर एक वृक्ष अवश्य लगाएंगे, उसका पोषण करेंगे एवं धरती माता का ऋण चुकाने का प्रयास करेंगे।

वृक्षारोपण करने पहुँचे मुम्बई और ठाणे जिले के कार्यकर्त्ता

चार वर्षों में रोपी एक लाख वृक्षों की पौध

अश्वमेध उपवन, टिटवाला की स्थापना के लिए मई, 2019 में भूमिपूजन हुआ था। स्थापना के प्रथम चरण में 3200 पौधों का रोपण किया गया। 2020 में मियावाकी पद्धति से 12,500 पौधों के रोपण के द्वारा उपवन को एक सघन वन का रूप प्रदान किया गया। 2019 से लेकर अब तक, चार वार्षिक अभियानों में विभिन्न स्थानों पर कुल 1,00,000 से भी अधिक पौधों का रोपण किया जा चुका है।

'तरु पुत्र रोपण महायज्ञ' कर सैकड़ों वृक्षों की पौध लगाई

रायबरेली। उत्तर प्रदेश : गायत्री परिवार रायबरेली की ओर से पर्यावरण संरक्षण हेतु हनुमंत वाटिका, अटौरा बुजुर्ग, रायबरेली में 'तरुपुत्र रोपण महायज्ञ' का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में परिजनों, युवाओं, महिलाओं एवं बच्चों ने भाग लिया, आम, नींबू, अमरूद, आंवला और बेल जैसे वृक्ष लगाए। सबने यह संकल्प लिया कि वे इन वृक्षों की सेवा एवं सुरक्षा का उत्तरदायित्व भी निभाएँगे और पर्यावरण संरक्षण के इस कार्य को सतत् आगे बढ़ाते रहेंगे।

आयोजन में आधारशिला कॉलेज के डॉ. तहसीलदार सिंह, सेवानिवृत्त आईपीएस भी उपस्थित हुए। उन्होंने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि हर व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम पाँच पौधे अवश्य लगाने चाहिए।

क्षेत्र में अपनी तरह का यह पहला कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसने सभी को हरीतिमा संवर्धन का प्रभावशाली संदेश दिया। गायत्री परिवार के परिजनों के अतिरिक्त स्थानीय लोगों ने भी बड़ी श्रद्धा-भावना के साथ इस कार्यक्रम में शामिल होकर वृक्षारोपण किया।

वृक्षारोपण मास मनाया, कई विद्यालयों में किया वृक्षारोपण

अंडाल, पश्चिमी बर्धमान। पश्चिमी बंगाल

इस वर्ष गायत्री परिवार द्वारा मनाए गए वृक्षारोपण मास के अंतर्गत गायत्री परिवार की अंडाल शाखा ने कई स्थानों पर वृक्षारोपण किया। दिनांक 25 जुलाई को पीएचसी स्वास्थ्य केन्द्र प्रांगण में वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में बड़ी संख्या में वृक्षों की पौध लगाई गई। इसके उपरांत पीएचसी केन्द्रीय विद्यालय और अनाथाश्रम में भी बड़े स्तर पर वृक्षारोपण किया गया। अंडाल इक़बाल अकादमी, उर्दू हाई स्कूल के प्रांगण में स्कूल प्रशासन एवं गायत्री परिवार परिजनों के सहयोग से वृक्षारोपण किया गया। विद्यालय के प्राचार्य श्री मोहम्मद इफ्ताक़ अहमद ने इस कार्य के लिए गायत्री परिवार की सराहना की।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन (नवग्रह वाटिका) के तीसरे वार्षिकोत्सव पर भव्य आयोजन

राजधानी दिल्ली में निकाली 'वृक्ष गंगा काँवड़ यात्रा'

दिल्ली। राष्ट्रीय राजधानी : राजधानी दिल्ली के गाँधी नगर की महिला कॉलोनी में स्थित पं. श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन के तृतीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर गायत्री परिवार पूर्वी दिल्ली एवं विप्र फाउंडेशन के संयुक्त प्रयासों से 551 बहिनों ने 1100 पौधों को अपने कंधों पर उठा कर 'वृक्ष गंगा काँवड़ यात्रा' निकाली। इस आयोजन में 1000 से भी अधिक परिजनों ने भाग लिया।

सृजन चेतना की अकल्पनीय छटा

दिल्ली वासियों के लिए वृक्ष गंगा काँवड़ यात्रा का यह दृश्य कल्पनातीत और आनन्ददायक था। सभी ने बहिनों और गायत्री परिवार की सृजन चेतना की अद्भुत छटा के दर्शन किए। गायत्री परिजन 'पर्यावरण बचाओ' का उद्घोष करते हुए हाथों में सद्वाक्यों की तख्तियाँ लिए चले जा रहे थे।

गायत्री चेतना केन्द्र, नोएडा के व्यवस्थापक श्री योगेश शर्मा के नेतृत्व में यह भव्य यात्रा गायत्री शक्तिपीठ विश्वास नगर से प्रारम्भ होकर पं. श्रीराम शर्मा आचार्य स्मृति उपवन पहुँची। वहाँ सभी ने काँवड़ में लाए गए पौधों का रोपण किया, दिल्ली के सुप्रसिद्ध हाथी पार्क एवं तिकोना पार्क में भी वृक्षारोपण किया गया।

वृक्ष काँवड़ यात्रा एवं वृक्षारोपण में कई पार्षद, समाजसेवी, विप्र फाउंडेशन के अध्यक्ष श्री कमल शर्मा, जैन समाज की साध्वी दीप्ति, आरएसएस में पर्यावरण गतिविधि के प्रभारी श्री राम मोहन जी इत्यादि अत्यंत प्रतिष्ठित वर्ग के लोग भी शामिल हुए। विशिष्ट अतिथियों का स्वागत युगनिर्माण सत्संकल्प की फ्रेम जड़ित फोटो प्रदान करके किया गया।

यूथ ग्रुप की वृक्ष काँवड़ यात्रा

कलेक्टर व अधिकारियों ने भाग लिया

शिवालयों में जलाभिषेक और नुक्कड़ नाटक थे विशिष्ट आकर्षण

मोडासा। गुजरात

दिनांक 3 अगस्त को मोडासा में गायत्री परिवार यूथ ग्रुप ने विशाल वृक्ष काँवड़ यात्रा निकाल कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। यात्रा के आरंभ में जिला कलेक्टर सुश्री प्रशस्ति पारीक ने पौधों से भरे रथ की पूजा की एवं हरी झंडी दिखाकर यात्रा का शुभारंभ किया। अनेक प्रशासनिक अधिकारियों ने भी इस यात्रा में भाग लिया।

गायत्री परिवार के सैकड़ों युवाओं के साथ अनेक क्षेत्रीय लोगों ने अपने कंधों पर शिवजी के प्रिय पौधों को काँवड़ में धारण कर श्रावण मास के शुभ अवसर पर भगवान शिव को अपनी भावांजलि अर्पित की। वृक्षगंगा काँवड़ यात्रा के रास्ते में आने वाले सभी मन्दिरों में गंगाजल से भगवान शिव का जलाभिषेक किया गया। स्थान-स्थान पर बच्चों ने लघु नाटिकाओं के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

4 वर्षों में 4000 वृक्ष लगाए

गायत्री परिवार यूथ ग्रुप मोडासा पिछले 212 रविवारों से 'प्राणवान संडे' एवं 'मेरा घर-मेरा वृक्ष' अभियानों के अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर हरीतिमा संवर्द्धन की गतिविधियाँ चला रहा है। इन चार वर्षों में अब तक 4,000 से भी अधिक वृक्ष लगाए जा चुके हैं।

जन्मशताब्दी के उत्साह के साथ गतिशील हो रहे हैं विविध अभियान

जनसंपर्क को गति देने में विशिष्ट भूमिका निभा रहा है पाक्षिक प्रज्ञा अभियान

पाटन, दुर्ग। छत्तीसगढ़

पाटन ब्लॉक में गायत्री परिवार जन्मशताब्दी वर्ष के विशेष उत्साह के साथ अपनी सक्रियता को नई ऊँचाइयाँ प्रतिष्ठित करने के लिए प्रयत्नशील है। सभी कार्यकर्त्ताओं के सामूहिक पुरुषार्थ से प्रज्ञा अभियान को जन-जन तक पहुँचाते हुए जनसंपर्क अभियान को कई गुना बढ़ा दिया गया है, जिसके माध्यम से अन्य रचनात्मक कार्यक्रमों को भी उल्लेखनीय गति मिल रही है।

पाटन ब्लॉक के कार्यकर्त्ताओं ने वृक्षारोपण सप्ताह मनाते हुए पूरे ब्लॉक में बड़े पैमाने पर पौधारोपण किया।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में गतवर्ष 7000 विद्यार्थी शामिल हुए थे। इस वर्ष स्कूलों और महाविद्यालयों में नियमित रूप से व्यक्तित्व निर्माण एवं नैतिक शिक्षा की कक्षाएँ आयोजित की जा रही हैं। प्राचार्यों को प्रज्ञा अभियान पाक्षिक एवं युग निर्माण सत्संकल्प पाठ का महत्त्व समझाकर उनकी प्रतियाँ भेंट की जा रही हैं। आशा है इन प्रयासों के साथ जनसंपर्क बढ़ाते हुए विद्यार्थियों की संख्या रिकॉर्ड स्तर तक बढ़ेगी।

जन्मशताब्दी के जनसंपर्क अभियान को तेज करते हुए महिला मंडल द्वारा सामूहिक साधना, दीपयज्ञ एवं संस्कारों के कार्यक्रमों को गति दी गई है। इन सभी कार्यक्रमों में पाक्षिक प्रज्ञा अभियान पाक्षिक के माध्यम से मिशन का संदेश पहुँचाया जा रहा है।

उपरोक्त सक्रियता को गति देने में श्री एस.आर. बांधे, डॉ. आर. एल. पेन्डरिया, श्री मेघ वर्मा, श्री ओमप्रकाश चन्द्राकर, श्री अनिल कुमार साहू, श्री मदनलाल यादव, सुश्री रुक्मिणी निर्मल, श्रीमती रामेश्वरी साहू, नीता वर्मा, पद्मा लहरी, भारती पेंडरिया, डोमन चन्द्राकर, यशवंत साहू, उमेश साहू एवं विनय साहू का विशेष योगदान रहा है।

जन्मशताब्दी जनसम्पर्क गोष्ठी

गायत्री शक्तिपीठ पाटन में दिनांक 11 अगस्त, रक्षाबंधन के दिन शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री ब्योमेष देशमुख की अध्यक्षता में जन्मशताब्दी जनसंपर्क संगोष्ठी सम्पन्न हुई। उपस्थित परिजनों ने केन्द्रीय प्रतिनिधियों से जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों की रूपरेखा समझते हुए उनके प्रभावशाली क्रियान्वयन हेतु अपने समयदान एवं सक्रियता के संकल्प लिए। उपज़ोन समन्वयक ने प्रत्येक घर में गायत्री माता एवं पूज्य गुरुदेव के विचारों को पहुँचाने तथा प्रज्ञा अभियान पाक्षिक को अधिक से अधिक घरों तक पहुँचाने का निर्देश दिया।

रक्षाबंधन पर अनोखा उपहार

रक्षाबंधन पर्व भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। बहिनों ने सभी भाइयों की कलाई पर राखी बाँधी, तो भाइयों ने भी ब्राह्मणोचित नेग दिये। श्री गिरिधारी साहू जी ने युग निर्माण योजना की पाँच प्रतियों का चंदा बहिन को भेंट कर उन्हें पाँच नये घरों तक नियमित रूप से पहुँचाने का अनुकरणीय, उत्साहवर्धक और प्रेरक संकल्प लिया।

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान

151 घरों में गायत्री यज्ञ

कोरबा। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार कोरबा के अथक प्रयासों से गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान को निरंतर गतिशील रखा जा रहा है। इसी क्रम में दिनांक 3 अगस्त को प्रातः 10 से 1 बजे के बीच कोरबा के बालको नगर क्षेत्र में 151 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराया गया। सभी घरों में उपस्थित श्रद्धालुओं ने युग निर्माण सत्संकल्प का पाठ किया तथा उन्हें इसका नियमित पाठ करने की प्रेरणा दी गई।

घर-घर यज्ञ संचालन के लिए कोरबा, जांजगीर एवं सक्ती जिलों से गायत्री परिवार के 151 युग पुरोहित बालको नगर पधारे थे। सम्पूर्ण बालको नगर वासियों ने इन यज्ञों के कारण विनिर्मित एक दिव्य आध्यात्मिक वातावरण की अनुभूति की।

हर घर में यज्ञाहुतियों के साथ विश्व शान्ति एवं सबके कल्याण की प्रार्थना की गई। गृहे-गृहे यज्ञ अभियान की सफलता में श्री शिवचरण कश्यप, श्री डी.के. वर्मा, श्री दानेश्वर शर्मा, श्री भगत राम साहू, श्री चंडी यादव, श्री तेज राम साहू, रंजीत यादव सहित गायत्री परिवार के समस्त कर्मठ एवं सेवाभावी परिजनों का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

विचार क्रान्ति के लिए स्टिकर अभियान चलाया

बगोदर। झारखण्ड

गायत्री परिवार बगोदर के द्वारा पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए महाविद्यालयों, विद्यालयों, सरकारी एवं गैर सरकारी प्रतिष्ठानों, मन्दिरों, दुकानों एवं घरों में बड़ी संख्या में सद्वाक्य स्टिकर्स चिपकाए जा रहे हैं। शिक्षण संस्थानों के प्राचार्यों एवं आचार्यों ने इस अभियान का खुले दिल से स्वागत किया है। सभी ने एक स्वर में कहा कि आज जहाँ अच्छे विचारों एवं संस्कारों की कमी हो रही है, वहीं गायत्री परिवार संस्कारों की स्थापना हेतु पूर्ण रूपेण संकल्पित है। स्टिकर अभियान से सभी को महापुरुषों के विचारों से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है। निःसंदेह यह विचार विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को ऊँचा उठाने की सतत प्रेरणा देते रहेंगे। सभी ने इस कार्य को अनवरत जारी रखने का अनुरोध किया।

अभियान की सफलता में श्री संजय कुमार विभूति, गायत्री परिवार के श्रद्धाभावी परिजनों, विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्राध्यापकों, अध्यापकों, अधिकारियों, छात्रों एवं आम जनता का पूर्ण सहयोग प्राप्त हुआ। इस अभियान को गति देने में विद्यार्थियों के अलावा शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, दुकानदार आदि अनेक वर्ग के लोगों का प्रशंसनीय सहयोग प्राप्त हो रहा है।

ज्ञानयज्ञ योजना-प्रयागराज

यह अंक शान्तिकुञ्ज द्वारा गायत्री परिवार की ज्ञानयज्ञ शाखा, प्रयागराज के सौजन्य से ब्रह्मभोज योजना के अंतर्गत आधे मूल्य में उपलब्ध कराया जा रहा है।

संयोजक : **श्री देवब्रत साहा राय, प्रयागराज मोबाइल एवं व्हॉट्सएप** : 9415638196

गायत्री सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड की आदिशक्ति है, इस सृष्टि के अस्तित्व का मूल आधार है। परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी उस सूर्य-सविता के समान हैं, जो अपने तपोबल से उस ब्राह्मी चेतना को घनीभूत कर मानवमात्र तक पहुँचा रहे हैं। वही चेतना, जिससे प्राणिमात्र में नवप्राणों का संचार होता है, धरती पर वृक्ष-वनस्पतियाँ उगती हैं-खिलती हैं, सृष्टि का कण-कण एक नियम, अनुशासन का पालन करता है। गायत्री की उपासना-साधना से आत्मबल बढ़ता है, सद्बुद्धि का जागरण होता है, समाज में संतुलन, सामंजस्य, सद्भाव की स्थापना होती है। यही वर्तमान युग की तमाम विसंगतियों के समाधान की प्रमुख आवश्यकता है।

गायत्री उपासना से जीवन में देवत्व का उदय और अवांछनीयताओं का अंत सुनिश्चित है। जिस घर में गायत्री उपासना होगी, वह घर स्वर्ग बनता चला जायेगा। गायत्री इस युग की संजीवनी है। आज मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए जन-जन के जीवन में आद्यशक्ति गायत्री का अभिवर्धन अनिवार्य हो गया है। **पाक्षिक प्रज्ञा अभियान युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के विचार और अखिल विश्व गायत्री परिवार के समाचारों के माध्यम से समाज को यही प्रेरणा दे रहा है।**

लक्ष्य 1,00,000

ज्ञानयज्ञ शाखा प्रयागराज युग निर्माण आन्दोलन के लिए समर्पित परिजनों के सहयोग से विगत 25 वर्षों से करोड़ों लोगों तक पूज्य गुरुदेव का साहित्य पहुँचा रही है। ज्ञानयज्ञ प्रयागराज शाखा अखण्ड दीप एवं परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी-2026 तक एक लाख लोगों तक प्रज्ञा अभियान को पहुँचाने के लिए संकल्पित है। इसी संकल्प के अंतर्गत आधी कीमत पर यह प्रज्ञा अभियान उपलब्ध कराया जा रहा है, ताकि **जरूरतमंदों को आर्थिक सहयोग मिल सके**, पूज्य गुरुदेव के विचार उन व्यक्तियों तक पहुँच सकें, जो अभी उनसे अछूते हैं, हमारा जनसंपर्क अभियान बढ़े, हमारा हर परिजन गुरुचेतना का विस्तारक बनने का सौभाग्य प्राप्त कर सके।

गुरुकृपा से जो व्यक्ति ज्ञानयज्ञ में समर्थ हैं, जो अपने कार्यक्रमों की बचत राशि से कुछ अंश इस योजना के लिए निकाल सकते हैं, वे कृपया अवश्य सहयोग करें, ताकि इस योजना का लाभ अधिक से अधिक लोगों को मिल सके।

यह सहयोग राशि 'ज्ञानयज्ञ योजना प्रयागराज' के मद में सीधे शान्तिकुञ्ज के बैंक खातों में ही जमा करानी होगी, जिसकी रसीद शान्तिकुञ्ज द्वारा दी जायेगी। मोबाइल 9415638196 अथवा 9258369413 पर संपर्क कर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान एवं शान्तिकुञ्ज के बैंक खातों के नम्बर प्राप्त किये जा सकते हैं।

विद्यार्थियों ने आजीवन नशा न करने की शपथ ली

धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार धमतरी के माध्यम से नत्थू जी जगताप नगर निगम उ.मा. विद्यालय में किशोर कौशल शिविर का आयोजन हुआ। इसमें बच्चों को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी गई तथा एकाग्रता प्राप्ति के सुगम उपाय एवं अन्य महत्त्वपूर्ण विषयों पर उद्बोधन हुए। भा.सं.ज्ञा.प. के जिला सचिव श्री एल.के. यादव जी ने बच्चों को जीवन में सफलता एवं उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए नियमित रूप से गायत्री मंत्र का जप करने की प्रेरणा दी। सभी श्रोताओं ने युग निर्माण सत्संकल्प दोहराया।

शिविर के अंत में अनेक विद्यार्थियों ने आजीवन नशा न करने एवं दूसरे लोगों को भी नशामुक्ति की प्रेरणा देते रहने का संकल्प लिया। 11 विद्यार्थी मंच के समक्ष आए और अपने नशामुक्त जीवन के संकल्प की घोषणा की, शपथ ली। श्री अमरजीत सिंह बेदी ने सभी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम का समापन किया।

निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया

चिकित्सक व गणमान्य अतिथियों के साथ लाभार्थी परिजन, बच्चे और आयोजकगण

श्री विजयापुरम। अण्डमान निकोबार

10 अगस्त को ब्रुक्षाबाद सभागार, श्री विजया पुरम में त्रिपदा सजल महिला मंडल, भगवती महिला मंडल एवं विवेकानंद प्रज्ञा मंडल द्वारा बाल संस्कार शालाओं के बच्चों, उनके अभिभावकों एवं एवं ब्रुक्षाबाद के वनवासी भाई बहिनों के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित किया गया। डॉ. रोहित पाल, बीएचएमएस (गोल्ड मेडलिस्ट) कुसुम क्लिनिक ने इसके लिए अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। उन्होंने अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छे खान-पान का महत्त्व भी बताया।

रामकृष्ण मिशन के स्वामी प्रकाश महाराज की गरिमामई उपस्थिति रही। त्रिपदा सजल महिला मंडल की प्रमुख सत्यावती जी, भगवती महिला मंडल की प्रमुख वंदना जी, विवेकानंद प्रज्ञा मंडल के प्रमुख हेमंत जी, सोशल मीडिया प्रदेश संयोजक प्रियांक कुमार प्रजापति जी एवं बाल संस्कार शाला के संचालक चंपा जी, रश्मी जी एवं पिंकी जी का विशेष योगदान रहा। डॉक्टरों की टीम को अभिनंदन स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव का लिखा साहित्य एवं गायत्री परिवार का मुख पत्र प्रज्ञा अभियान भेंट किया गया।

जम्मू-कश्मीर में कन्या कौशल शिविरों को मिल रही शानदार सफलता

- 26 बालिकाओं ने गायत्री मंत्र दीक्षा ली।
- तीन मुस्लिम बेटियाँ भी शामिल थीं।

शिविर में गायत्री मंत्र की दीक्षा लेने वाली बेटियाँ

सुन्दरबनी। जम्मू-कश्मीर : सुन्दरबनी शाखा द्वारा दिनांक 10 अगस्त को हाई स्कूल बरनारा में कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया गया। इसमें विद्यालय की छात्राओं के अतिरिक्त आसपास के गाँव की 29 बेटियों ने भाग लिया। तीन मुस्लिम बेटियाँ भी शिविर में शामिल थीं, जिन्होंने पूर्ण शुद्धता से गायत्री मंत्र का उच्चारण किया और पूरी श्रद्धा, भक्ति के साथ गायत्री परिवार की प्रेरणाओं को हृदयंगम किया। 26 बालिकाओं ने गायत्री मंत्र दीक्षा ली।

कन्या कौशल शिविर में जीवन में सुसंस्कारिता और गुरु-गायत्री का महत्त्व, सहज सौन्दर्य बनाम फैशन, जीवन जीने की कला, व्यक्तित्व परिष्कार, मित्र बनाएँ किंतु सोच समझ कर इत्यादि विषयों पर प्रतिभावान परिजनों द्वारा अत्यंत प्रेरक मार्गदर्शन प्रदान किया गया। आयोजन की सफलता में शंकर जी, राजेन्द्र लखन पाल, आराधना दीदी, मदन बाबू, संजय, मधु, अनिल बाबू, दिनेश, रतन भाई, सतपाल, जयपाल एवं अनेक सेवाभावी परिजनों का सहयोग प्राप्त हुआ।

ज्ञानयज्ञ योजना के प्रमुख सहयोगी

(1) डॉ. सुनीत कुमार, एम.डी (वरिष्ठ रेडियोलॉजिस्ट), संचालक : प्रज्ञा स्कैनिंग सेण्टर, जॉर्ज टाउन प्रयागराज (उ.प्र.)
(2) श्रीमती ऋतु सुनीत कुमार, जॉर्ज टाउन, प्रयागराज (उ.प्र.)
(3) श्री अभिनव मित्तल, जॉर्ज टाउन, प्रयागराज (उ.प्र.)
(4) श्रीमती गिन्नी मित्तल, जॉर्ज टाउन, प्रयागराज (उ.प्र.)
(5) आयुष्यमान कबीर मित्तल, जॉर्ज टाउन, प्रयागराज (उ.प्र.)
(6) आयुष्यमान राम मित्तल, जॉर्ज टाउन, प्रयागराज (उ.प्र.)
(7) श्रीमती रश्मि जायसवाल, टैगोर पब्लिक स्कूल, प्रयागराज (उ.प्र.)
(8) श्रीमती दीपा सिंह, झाँसी (उ.प्र.)
(9) श्रीमती शान्ति देवी, पत्नी स्व. श्री द्वारिका प्रसाद चैतन्य, वडोदरा (गुजरात) : (ज्ञानयज्ञ के पुरोधा अपने पति स्व. श्री द्वारिका प्रसाद चैतन्य, पूर्व व्यवस्थापक, गायत्री तपोभूमि, मथुरा की स्मृति में)
(10) श्री संजय कुमार गुप्ता (से.नि. वरिष्ठ बैंक अधिकारी) वर्तमान में जिला समन्वयक प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
(11) श्रीमती करुणा खरे, 341/25, शास्त्री नगर, प्रयागराज (उ.प्र.) (अपने पति स्वर्गीय श्री चंद्रभूषण खरे की स्मृति में)
(12) श्री दिनेश कुमार, उप कुलसचिव, बुन्देलखण्ड वि.वि., झाँसी (उ.प्र.)
(13) श्री बैजनाथ वर्मा, गायत्री ज्वेलर्स, चाका ब्लॉक, सी.ओ.डी. रोड, नैनी, प्रयागराज (उ.प्र.)
(14) श्री सुशील कुमार श्रीवास्तव, (से.नि. लेखाधिकारी) प्रीतम नगर, प्रयागराज (उत्तर प्रदेश)
(15) श्री विजय शंकर सिंह (से.नि. लेखाधिकारी, ए.जी.यू.पी.) 8/6 ताशकन्द रोड़, प्रयागराज (उ.प्र.)
(16) श्री अवधेश सिंह (कार्यालय अधीक्षक) एन.सी.आर., जी.एम. कार्यालय (रेलवे), सुबेदार गंज, प्रयागराज (उ.प्र)
(17) श्री जगदीश चन्द्र जोशी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
(18) श्री हरे राम सिंह (एस.बी.आई.) विश्नापुरी कॉलोनी, प्रयागराज
(19) सुश्री पूर्णिमा कुमारी, विश्नापुरी कॉलोनी, पोंगहट, प्रयागराज (उ.प्र)
(20) इं. ईशान सिंह जायसवाल, सॉफ्टवेअर इंजीनियर, मेनचेस्टर, यू.के.
(21) श्री देवब्रत साहा राय, प्रीतमनगर, प्रयागराज (उ.प्र) (अपने माता-पिता की स्मृति में)
(22) पं. नरेन्द्र कुमार शर्मा, एडवोकेट, राजेपुर, कपसा, फूलपुर, प्रयागराज (पिता स्व. श्री रामाधार जी के स्मृति में)
(23) श्री दिनेश तबेला बक्स एवं श्रीमती उषा सक्सेना, डायरेक्टर लव डेल कॉन्वेण्ट स्कूल, 112के/23सी/1 भोला का पुरा, प्रीतम नगर, प्रयागराज (उ.प्र)
(24) श्री हीरालाल कुमावत, पुत्र श्री दौलतराम जी ग्राम. पो. दलोट, जिला-प्रतापगढ़ (राजस्थान)

ज्ञानयज्ञ योजना में अन्य सहयोगी महानुभाव

1. श्री संग्राम सिंह (ऑडिट ऑफिसर) IV/28 केन्द्रांचल, प्रीतम नगर, प्रयागराज
2. श्री ताराचन्द्र गुप्ता, वरिष्ठ अधिवक्ता (फौजदारी), जिला न्यायालय, प्रयागराज
3. श्री राजकुमार सिंह (पूर्व प्रधानाचार्य), न्याय नगर, प्रयागराज
4. श्री राजीव कृष्ण मिश्र, कमला नगर, प्रयागराज
5. श्री आर.पी. सिंह (वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी), झलवा, प्रयागराज
6. श्रीमती ललिता जायसवाल, अशोक नगर, प्रयागराज
7. श्री राजेन्द्र कुमार केसरवानी, ज़ेरॉक्स फोटोस्टेट, कचहरी रोड, प्रयागराज
8. श्री अखिलेश श्रीवास्तव, अल्लापुर, प्रयागराज
9. श्री सुन्दर लाल, कार्यालय अधीक्षक, उ.म.ले., सुबेदार गंज, प्रयागराज
10. श्री असीम मुखर्जी, एडवोकेट, करेलाबाग कॉलोनी, प्रयागराज
11. डॉ. अशोक कुमार पाण्डेय, 247बी/180 ऐलनगंज, प्रयागराज
12. श्री भीमशंकर पाण्डेय, बेनीगंज, प्रयागराज
13. श्रीमती उषा शर्मा, नया कटरा, प्रयागराज
14. श्रीमती इन्दू श्रीवास्तव, बेली रोड, नया कटरा, प्रयागराज
15. श्री आशुतोष कुमार गुप्ता, अधिवक्ता, अशोक नगर, प्रयागराज
16. श्रीमती मोनिका वर्मा, शिक्षा निदेशालय, प्रयागराज

दान, तप, व्रत और उपवास ही नहीं, अनीति से लड़ने के कठोर व्रत का पालन भी धर्म है।

नारी के सम्मान के संकल्प का पावन पर्व है रक्षाबंधन। -श्रद्धेया शैल जीजी

शान्तिकुञ्ज में रक्षाबंधन पर श्रावणी उपाकर्म का भव्य आयोजन

शान्तिकुञ्ज में रक्षाबंधन-श्रावणी पर्व पर दीपयज्ञ सम्पन्न कराती ब्रह्मवादिनी बहिनों की टोली

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज में मनाए गए श्रावणी-रक्षाबंधन पर्व ने हजारों श्रद्धालु-साधकों में मानवता के उत्थान के लिए आत्मोत्कर्ष और प्रेम भावना के विस्तार के संकल्प जगाए। अपने संदेश में अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेया शैलदीदी ने कहा कि रक्षाबंधन आत्मीयता विस्तार का पावन पर्व है। यह 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के भाव को चरितार्थ करने की प्रेरणा देता है। श्रद्धेया शैल जीजी ने रक्षाबंधन को नारी शक्ति के सम्मान का संकल्प लेने का पर्व बताया।

रक्षाबंधन के दिन श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी को राखी बाँधती बहिनें

ब्रह्ममुहूर्त में सामूहिक श्रावणी उपाकर्म संस्कार का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। शान्तिकुञ्ज के आचार्यों ने इस अवसर पर हेमाद्रि संकल्प व दश स्नान आदि का कर्मकाण्ड पूरे वैदिक विधि-विधान और युग निर्माणी प्रेरणाओं के साथ संपन्न कराया।

श्रावणी पर्व के उपलक्ष्य में 'वृक्षो रक्षति रक्षितः' की भावना के साथ वृक्षारोपण भी किया गया। उल्लेखनीय है कि शान्तिकुञ्ज की प्रेरणा से गुरुपूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक वृक्षारोपण मास मनाया जाता है, इसमें पूरे देश में लाखों वृक्ष लगाए जाते हैं।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने परम पूज्य गुरुदेव के ब्राह्मण जीवन को विश्व मानवता के लिए आदर्श और अनुकरणीय बताया। उन्होंने कहा कि आज समाज को ऐसे ब्रह्मपरायण व्यक्तित्वों की आवश्यकता है, जो अपने जीवन से समाज का पथ प्रदर्शन कर सकें। श्रावणी ऐसे ही व्यक्तित्व की साधना की प्रेरणा देता है।

रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में श्रद्धेया शैल जीजी ने देश-विदेश से आये हजारों साधकों एवं शान्तिकुञ्ज-देसंविवि के कार्यकर्त्ताओं, आचार्यों एवं विद्यार्थियों को रक्षा सूत्र बाँधे और सबसे उज्ज्वल भविष्य की कामना की, आशीष दिये। बहिनों ने रक्षाबंधन पर्व का शुभारंभ श्रद्धेय डॉ. साहब को राखी बाँधते हुए किया।

गुरुदेव-माताजी की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए उनके प्रति एकनिष्ठ भाव से समर्पित साधक श्री अगमवीर सिंह जी

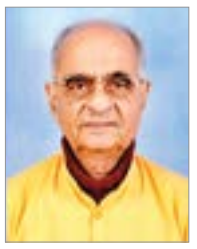

शान्तिकुञ्ज के अत्यंत प्राणवान कार्यकर्त्ता, 81 वर्षीय श्री अगमवीर सिंह का दिनांक 27 जुलाई को देहावसान हो गया। वे पूरनपुर, पीलीभीत (उ.प्र.) के मूल निवासी थे। वे अपनी धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा जी के साथ सन् 1989 से शान्तिकुञ्ज में जीवनदानी कार्यकर्त्ता के रूप में सेवाएँ दे रहे थे।

समर्पण की कहानी

सन् 1989 में पहली बार अपनी माताजी के कहने पर पाँच दिवसीय सत्र में शान्तिकुञ्ज आए। घर लौटते ही अनुष्ठान किया। अनुष्ठान के अंतिम दिन स्वप्न में दादा गुरुदेव का निर्देश मिला, ''तू मेरे साथ चल।'' श्री अगमवीर सिंह जी ने अगली सुबह आनन-फानन में सामान समेटा और शान्तिकुञ्ज के लिए चल दिए। घर वालों ने पूछा, ''कब लौटोगे?'' उन्होंने कहा, ''कभी नहीं।'' वे तब से ही पूरे तन, मन, धन से पूज्य गुरुदेव के प्रति अनन्य भाव से समर्पित हो गए।

ग्राम प्रबंधन में विशिष्ट योगदान

स्व. श्री अगमवीर सिंह जी एक किसान थे। उनके कृषक कार्य के अनुभवों का शान्तिकुञ्ज-देव संस्कृति विश्वविद्यालय को भरपूर लाभ मिला। आरंभ में उन्होंने शान्तिकुञ्ज में ग्राम प्रबंधन विभाग में सेवाएँ प्रदान करते हुए भारत सरकार के सहयोग से चल रही 'ऋचा' एवं 'जलागम' योजनाओं के विस्तार में अहम योगदान दिया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में ग्राम प्रबंधन विभाग आरंभ होने पर वे इस विभाग से जुड़े और गौशाला, ग्राम प्रबंधन, गोबर गैस प्लांट के निर्माण, गौ आधारित स्वावलम्बन आदि कार्यों में अपना बहुमूल्य योगदान दिया।

स्व. श्री अगमवीर सिंह जी ने जन्मभूमि आँवलखेड़ा में व्यवस्थापक के रूप में सेवाएँ प्रदान कीं। वे देव संस्कृति विश्वविद्यालय में छात्र कल्याण अधिकारी के रूप में भी सेवाएँ दे रहे थे।

अपनी जन्मभूमि पीलीभीत में श्री अगमवीर सिंह जी ने अपनी 12.5 एकड़ भूमि गौशाला के लिए श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट, शान्तिकुञ्ज को दान कर दी थी। वहाँ आज गौसंवर्धन, ग्राम प्रबंधन का बड़े स्तर पर कार्य चल रहा है और शोधकार्य हो रहे हैं।

महान व्यक्तित्व के धनी

स्व. श्री अगमवीर सिंह जी उच्च कोटि के साधक थे। अत्यंत स्वल्प साधनों में उन्होंने जीवनयापन किया। अपने जीवन से सैकड़ों लोगों का पथ प्रदर्शन करते हुए उन्हें साधना, समर्पण का पाठ पढ़ाया।

स्वर्गीय श्री अगमवीर सिंह जी के तीनों बच्चे भी अपने पिता की प्रेरणाओं का अनुसरण करते हुए पूरी तरह से मिशननिष्ठ जीवन जी रहे हैं। सबसे बड़े श्री राजू चौधरी और बेटी श्रीमती गीता चौधरी दोनों ही अमेरिका में कार्यरत हैं। छोटा बेटा श्री आनंदवीर सिंह म्यूजिक थेरेपिस्ट के रूप में समाज सेवा कर रहे हैं।

एक बार अमेरिका में 108 कुण्डीय यज्ञ का संकल्प लिया गया। उनकी पुत्रवधु श्रीमती शैलजा चौधरी ने अपने बाबूजी (श्री अगमवीर सिंह जी) से यज्ञ के लिए धन की कमी की बात कही। तब बाबूजी से स्वयं से शुभारंभ करने की प्रेरणा मिलने पर अपने बैंक एकाउंट में केवल एक माह खर्च की राशि शेष रखकर सारी धनराशि यज्ञ के लिए दान कर दी।

पूरनपुर में भी एक सभा आयोजित कर स्व. अगमवीर सिंह जी को भावभरी श्रद्धांजलि दी गई।

रक्षाबंधन पर स्नेह संचार एवं आत्मीयता विस्तार

बंदियों को राखी बाँधकर उनके उज्ज्वल भविष्य की प्रार्थना की

रायपुर। छत्तीसगढ़

पावन रक्षाबंधन के दिन गायत्री परिवार की बहिनें केन्द्रीय कारागार रायपुर में पहुँचीं और 200 बंदी भाईयों को राखी बाँध कर रक्षाबंधन का पर्व मनाया। बंदी भाइयों का भविष्य उज्ज्वल हो, इसी कामना के साथ सभी बंदियों से उपहार स्वरूप सन्मार्ग पर चलने तथा जेल से रिहाई के बाद अच्छा नागरिक बनकर समाज व देश की सेवा करने का वचन लिया गया। सभी को पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा रचित साहित्य भेंट किया गया। कारागार में रक्षाबंधन पर्व मनाने के लिए जिला समन्वयक श्री लच्छूराम निषाद, अमित डोये तथा महिला मण्डल से पूर्णिमा साहू, अनोखी निषाद, प्रेमलता चंद्राकर,

केन्द्रीय कारागार में बंदियों को राखी बाँधतीं गायत्री परिवार की बहिनें

जानकी निषाद, त्रिवेणी साहू, नम्रता साहू, वीणा बघेल, रीना वर्मा, मनीषा शर्मा, नेहा साहू, सुनैना साहू इत्यादि पहुँचे थे। श्री शिवचंद वर्मा, अजय कुमार गुप्ता, लालेश्वर गोपाल, पितांबर साहू, हीरालाल साहू एवं दिलीप निषाद इत्यादि का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

पर्यावरण रक्षा एवं नारी सम्मान के संकल्प दिलाए

जमशेदपुर। झारखण्ड : गायत्री ज्ञान मंदिर भालूबासा में प्रज्ञा महिला मण्डल टाटानगर द्वारा रक्षा बंधन का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया गया। बहिनों ने युवा भाइयों की कलाई पर पवित्र प्रेम के अटूट बंधन का प्रतीक रक्षा सूत्र बाँधते हुए उनके उन्नत जीवन एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु गुरुचरणों में प्रार्थना की। स्मृति श्रीवास्तव ने पावन रक्षा बंधन पर्व पर भाइयों को नारीशक्ति के सम्मान तथा पर्यावरण की रक्षा का संकल्प दिलाया। प्रज्ञा महिला मण्डल की अध्यक्षा जसवीर कौर जी ने सबको अपनी शुभकामनाएँ दीं।

रक्षाबंधन पर्व पर वरिष्ठ परिजनों का सम्मान

धमतरी। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्तिपीठ धमतरी में रक्षा बंधन के पवित्र पर्व पर गुरु कार्य में विशेष योगदान करने वाले 22 वरिष्ठ परिजनों का सम्मान किया गया। सम्मान स्वरूप सभी को गायत्री मंत्र लिखित उत्तरीय, श्रीफल, स्मृति चिह्न एवं पुष्पगुच्छ भेंट किया गया। तत्पश्चात् बहिनों ने उनकी कलाई पर राखी बाँधी। गायत्री शक्तिपीठ धमतरी की प्रमुख प्रबंध ट्रस्टी श्रीमती खिलेश्वरी किरण ने सभी को सम्बोधित करते हुए कहा कि जिन परिजनों ने पूज्य गुरुदेव की सेवा में अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया, वे हमारे लिए बहुमूल्य धरोहर हैं। उनका जीवन हम सभी के लिए अनुकरणीय है, वन्दनीय है।

इस अवसर पर अनेक सेवाभावी परिजनों ने शक्तिपीठ संचालन के लिए सहायता राशि भी भेंट की। कार्यक्रम का संचालन जिला समन्वयक श्री दिलीप नाग एवं आभार प्रदर्शन बहिन खिलेश्वरी किरण द्वारा किया गया।

श्रावणी पर्व पर आत्मिक उत्कर्ष की प्रेरणाएँ

18 बटुकों के यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुए

यज्ञ संचालन करती श्री गोकुलचंद उपाध्याय की टोली और पुष्करणी तालाब में सम्पन्न हो रहा श्रावणी उपाकर्म

हैदराबाद। तेलंगाना: हैदराबाद में राजस्थानी ब्राह्मण समाज ने गायत्री परिवार के यज्ञीय विधि-विधान के साथ श्रावणी उपाकर्म सम्पन्न किया। मामडपल्ली के वेंकटेश मंदिर परिसर में स्थित पुष्करिणी तालाब में यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ, जिसमें 200 विप्र जनों ने भाग लिया। इस अवसर पर 18 बटुकों का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ।

हेमाद्री संकल्प, प्रायश्चित्त विधान, तर्पण आदि श्रावणी उपाकर्मों के साथ कार्यक्रम का संचालन गायत्री परिवार के श्री गोकुलचंद उपाध्याय की टोली ने किया। दूसरे चरण में 5 कुण्डीय गायत्रीयज्ञ एवं बटुकों का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ। राजस्थानी ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष पुरुषोत्तम लाला, मंत्री रामदेव नागला, संदीप, दामोदर जोशी, भरत चाणडा, मोहनलाल शर्मा, भगवान व्यास बिलाल व गणमान्य लोगों ने भाग लिया। गायत्री परिवार के गोकुलचंद उपाध्याय, विनोद चौरसिया, नरेश कुमार साहू, चन्द्रराज पटेल, राम आसरे जी, वेंकटेश, गीता का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

श्रावण मास में रुद्राभिषेक

खारघर, नवी मुम्बई। महाराष्ट्र : श्रावण के पवित्र माह में खारघर में स्थित आई माता मंदिर में गायत्री परिवार खारघर एवं कामोठे के 100 से भी अधिक लोगों ने सामूहिक रुद्राभिषेक किया। श्री अवधेश नारायण वर्मा ने भगवान शंकर तथा शिव परिवार की महिमा बताते हुए रुद्राभिषेक का कर्मकाण्ड सम्पन्न करवाया।

रुद्राभिषेक के उपरांत गायत्री यज्ञ किया गया, जिसमें सभी ने विश्व कल्याण के लिए गायत्री मंत्र, शिव गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र से आहुतियाँ प्रदान कीं। गायत्री चेतना केन्द्र के परिव्राजक श्री पीताम्बर शर्मा ने 2026 में होने वाले दिव्य अखण्ड दीपक एवं वंदनीया माता जी के जन्मशताब्दी महोत्सव पर होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी दी। गायत्री परिवार के विवेकानन्द युवा मंडल के द्वारा साहित्य स्टॉल लगा कर सभी तक पूज्य गुरुदेव का साहित्य पहुँचाया गया।

अपने उत्तराधिकारीयों के लिये धन संग्रह न करके उन्हें सुसंस्कारी और स्वावलंबी बनाना ही श्रेयस्कर है।

इंग्लैण्ड, लिथुआनिया और लातविया में देव संस्कृति के विस्तार की गौरव गाथा

भारतीय जीवन दर्शन की ओर बढ़ रहा है पश्चिमी देशों का आकर्षण

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युग नायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड और लातविया के अठारह दिवसीय प्रवास के बाद शान्तिकुञ्ज लौटे। उन्होंने शान्तिकुञ्ज में आयोजित एक संगोष्ठी में कहा-

''पश्चिमी देशों के युवाओं का अध्यात्म एवं भारतीय जीवन दर्शन की ओर तेजी से आकर्षण बढ़ रहा है। वे जीवन के प्रति भारतीय दृष्टिकोण; जिसमें संतुलित आहार, संयमित व्यवहार और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण संबंध की प्रेरणाएँ मिलती हैं, को अपनाना चाहते हैं। यूरोप के युवाओं में भौतिकता से उत्पन्न तनाव और अकेलेपन का गहरा असर दिखता है। भारतीय जीवन दर्शन उन्हें इस तनाव से मुक्ति दिलाकर आत्मिक शान्ति की अनुभूति कराता है।

प्रस्तुत है इंग्लैण्ड, लिथुआनिया और लातविया में देव संस्कृति के विस्तार की झाँकी, सार-संक्षेप में।

अखिल विश्व गायत्री परिवार की एक ऐतिहासिक उपलब्धि

ब्रिटिश संसद में युग नेतृत्व के लिए शान्तिकुञ्ज ने प्रस्तुत किया परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का चिंतन

पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025 में हुआ भारतीय संस्कृति का सम्मान

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की अध्यक्षता में आयोजित पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025 में भाग ले रहे गणमान्य

पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025 में लॉर्ड क्रिश रावल, निदेशक, फेथ इन लीडरशिप (यूके), डॉ. मार्क ओवेन, निदेशक, सेंटर फॉर रिलिजन, रीकॉन्सिलिएशन एण्ड पीस, यूनिवर्सिटी ऑफ विंचेस्टर, मिस्टर विलियम जोन्स, सीनियर फेलो, फ्यूचर ऑफ लाइफ इंस्टिट्यूट आदि प्रमुख अंतरराष्ट्रीय संगठनों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति उल्लेखनीय है।

लंदन। इंग्लैण्ड

लंदन में 1 अगस्त 2025 के दिन ब्रिटिश संसद के ऐतिहासिक परिसर में 'पीस एण्ड लीडरशिप कॉन्क्लेव 2025' का भव्य आयोजन हुआ। यह आयोजन अखिल विश्व गायत्री परिवार, हरिद्वार द्वारा ब्रिटेन की संसद (हाउस ऑफ पार्लियामेंट, वेस्टमिंस्टर) में किया गया था, जो स्वयं में एक ऐतिहासिक उपलब्धि है। यह कार्यक्रम केवल एक बौद्धिक विमर्श ही नहीं था, बल्कि भारतीय संस्कृति के सार्वभौमिक मूल्यों-वसुधैव कुटुम्बकम्, करुणा एवं स्वधर्म को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का एक ऐतिहासिक अवसर भी बना। इसके माध्यम से विश्व मनीषा को यह बोध कराया जा सका कि भारत की प्राचीन आध्यात्मिक परंपराएँ आज के समय में भी विश्व के लिए मार्गदर्शक भूमिका निभा रही हैं।

> "शांति केवल एक बाहरी स्थिति नहीं, बल्कि आंतरिक चेतना का विस्तार है। भारतीय दर्शन हमें सिखाता है कि नेतृत्व का मूल आधार आत्मानुशासन, करुणा और वैश्विक कल्याण की भावना में निहित होना चाहिए।"
> *- आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी*

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और नैतिक नेतृत्व विषय पर समस्त मानवता के लिए कल्याणकारी ओजस्वी संदेश दिया। उन्होंने अपने उद्बोधन में भारतीय दर्शन और विश्व शांति की अवधारणाओं को प्रस्तुत करते हुए वर्तमान युग में उनकी प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के उद्बोधन में भारतीय जीवन मूल्यों, गायत्री मंत्र, आध्यात्मिक नेतृत्व और विश्व बंधुत्व की विचारधारा को विशेष रूप से रेखांकित किया गया था। उन्होंने बहुत ही व्यावहारिक रूप में समझाया कि कैसे अखिल विश्व गायत्री परिवार के संस्थापक वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा प्रतिपादित विचार आज भी मानवता के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो रहे हैं।

सभी उपस्थित वरिष्ठों एवं विशेषज्ञों ने डॉ. पण्ड्या के विचारों की सराहना करते हुए भारतीय आध्यात्मिकता को आज के नेतृत्व और नीतिगत विमर्श के लिए अत्यंत प्रासंगिक बताया। इस कार्यक्रम को शताब्दी वर्ष-2026 से पूर्व अंतर्राष्ट्रीय प्रस्तावना के रूप में भी देखा जा रहा है, जिससे भारत के सांस्कृतिक गौरव को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा मिली है। यह सम्मेलन करोड़ों गायत्री साधकों और नैष्ठिक कार्यकर्त्ताओं को गौरवान्वित करने वाला था।

यूरोपीय लोगों में भारतीय अध्यात्म के प्रति बढ़ रही है आस्था

विल्नियस में दीपयज्ञ

विल्नियस। लिथुआनिया

लिथुआनिया के विल्नियस शहर में वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति के संवाहक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की गरिमामयी उपस्थिति में दीपयज्ञ का आयोजन सम्पन्न हुआ। शहर के मध्य में स्थित एक प्रमुख स्थल पर आयोजित इस दीपयज्ञ में श्रद्धावान भारतीय प्रवासियों, स्थानीय नागरिकों और आध्यात्मिक जिज्ञासु साधकों ने भाग लिया। अत्यंत दिव्यता से ओतप्रोत शांत वातावरण में प्रज्वलित हो रहा प्रत्येक दीप अंतश्चेतना के प्रकाश का प्रतिनिधित्व करता प्रतीत हो रहा था। पवित्र वैदिक मंत्रों और यज्ञ की सुगंध ने एक भावपूर्ण वातावरण का निर्माण किया, जिससे उपस्थित सभी लोगों में सद्भाव और सामूहिक शांति की भावना जाग्रत् हुई।

विल्नियस में आयोजित दीपयज्ञ का संचालन करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

आदरणीय डॉ. पण्ड्या ने आज की दुनिया में भारतीय संस्कृति और अध्यात्म की प्रासंगिकता तथा पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा परिकल्पित विश्व बंधुत्व के संदेश पर गहन विचार साझा किए। इस आध्यात्मिक सम्मेलन को एक सार्थक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और भारत और लिथुआनिया के बीच आध्यात्मिक संबंधों को मजबूत करने की दिशा में प्रभावशाली कदम माना जा सकता है।

माईकोलास रोमरीस विश्वविद्यालय, लिथुआनिया के उप कुलपति एवं गणमान्यों से विचार विमर्श

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने लिथुआनिया स्थित माईकोलास रोमरीस विश्वविद्यालय में उप कुलपति डॉ. नातालिया माजेइकिएने, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग विभाग की प्रमुख डॉ. अनाले मेचिसलोवाइते एवं वाइस डीन डॉ. लिनास बुकाउसकस के साथ भेंट की। इस अवसर पर शैक्षणिक आदान-प्रदान, संयुक्त शोध परियोजनाओं तथा सांस्कृतिक सहयोग को लेकर विस्तृत विचार-विमर्श हुआ। यह संवाद दोनों देशों के साझा मूल्यों और सांस्कृतिक सौहार्द्र पर आधारित उज्ज्वल भविष्य को प्रोत्साहित करने वाला था।

माईकोलास रोमरीस विश्वविद्यालय में उप कुलपति डॉ. नातालिया माजेइकिएने एवं अन्य गणमान्यों को युग साहित्य भेंट करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

भारतीय राजदूत से मुलाकात

लिथुआनिया में भारत के राजदूत महामहिम श्री टी.वी. नागेन्द्र प्रसाद जी से आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की भेंट हुई। इस अवसर पर भारत और लिथुआनिया के बीच सांस्कृतिक एवं शैक्षणिक सहयोग को सुदृढ़ करने संबंधी विचारों का आदान-प्रदान किया गया।

राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान में एक दिव्य यज्ञ संस्कार

विशेष सम्मान

देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के मार्गदर्शन में लातविया के सालास्पिल्स स्थित राष्ट्रीय वनस्पति उद्यान में एक दिव्य यज्ञ संस्कार का आयोजन सम्पन्न हुआ। बड़ी संख्या में स्थानीय लातवियन परिजनों ने यज्ञ में भाग लिया। लातविया में भारत की नवनियुक्त राजदूत श्रीमती नम्रता कुमार जी की विशिष्ट उपस्थिति से इस सांस्कृतिक समारोह की गरिमा और भी बढ़ गई।

महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ

इस प्रतिष्ठित उद्यान में इस प्रकार के किसी आध्यात्मिक-सांस्कृतिक कार्यक्रम के आयोजन की अनुमति पहली बार प्रदान की गई थी, जो भारतीय संस्कृति के प्रति सम्मान की सूचक है।

राजदूत श्रीमती नम्रता कुमार जी की उपस्थिति में यज्ञ कराते डॉ. चिन्मय जी

लातविया के अनेक परिजनों ने भावविभोर होकर भारतीय तिरंगे के साथ चित्र भी खिंचवाए, जो भारतीय संस्कृति के प्रति उनके आत्मीय जुड़ाव को प्रदर्शित करता है।

श्रद्धांजलि : यज्ञ में उत्तराखंड के धराली और हर्षिल में हुई बादल फटने की घटना तथा आज ही के दिन हिरोशिमा एवं नागासाकी की विभीषिका में वीरगति को प्राप्त हुए हुतात्माओं को श्रद्धांजलि स्वरूप श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ समर्पित की गईं, उनकी आत्मशान्ति एवं सद्गति के लिए प्रार्थना की गई।

ज्योति कलश के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ दीपयज्ञ

लंदन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की गौरवशाली उपस्थिति एवं ज्योति कलश के सान्निध्य में स्थानीय गायत्री परिजनों द्वारा 1 अगस्त को दीपयज्ञ का आयोजन किया गया। गायत्री परिवार के परिजनों के अतिरिक्त शहर के कई गणमान्य दीपयज्ञ में शामिल हुए। आदरणीय डॉ. पण्ड्या ने सभी को जन्मशताब्दी वर्ष का विशेष संदेश देते हुए स्वयं को दीपक की भाँति विकसित होने और विश्व मानवता के कल्याण के लिए समर्पित होने की प्रेरणा दी। विदित हो कि जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के प्रयाज के क्रम में लेस्टर से अपनी यात्रा आरंभ कर ज्योति कलश लंदन पहुँचा था।

पोलैण्ड के मानद कौंसल श्री जोहरी जी से मुलाकात

लंदन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने पोलैंड के व्रोकला शहर में भारत सरकार के मानद कौंसल श्री कार्तिकेय जोहरी जी एवं उनके सुसंस्कारी परिवार से आत्मीय भेंट की। इस अवसर पर लार्ड कुमार रावल जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस सौहार्द्रपूर्ण भेंट में लंदन में प्रस्तावित भव्य कार्यक्रम एवं भारत की वैश्विक सांस्कृतिक भूमिका को लेकर विस्तृत एवं सारगर्भित चर्चा हुई। यह संवाद भारत की आध्यात्मिक चेतना को वैश्विक मंचों पर प्रतिष्ठित करने की दिशा में एक प्रेरणादायी पहल कहा जा सकता है।

एकीकृत स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक शोध कार्यों पर चर्चा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी लातवियन मेडिकल एसोसिएशन के अध्यक्ष प्रो. वाल्डिस पिरागस एवं एशियन इंस्टीट्यूट के निदेशक प्रो. स्लाविन्स कस्पार्स से मिले। उनके साथ एकीकृत स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक शोध के क्षेत्र में संभावित सहयोग के विविध आयामों पर विस्तार से चर्चा हुई। यह संवाद स्वास्थ्य एवं संस्कृति के संबंध में अनुसंधान को प्रोत्साहित करेगा।

स्वतंत्रता दिवस जन्मशताब्दी वर्ष के उत्साह में प्रबल हुई राष्ट्र के पुनर्निर्माण की भावना

शान्तिकुञ्ज, देसंविवि एवं गायत्री विद्यापीठ में छाई राष्ट्रभक्ति की उमंग

शान्तिकुञ्ज परिसर में बैण्ड के साथ ध्वजवंदन करती बहिनें और गायत्री विद्यापीठ के बच्चे

गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय एवं गायत्री विद्यापीठ में 79वाँ स्वतंत्रता दिवस उत्साह और उमंग के साथ मनाया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार की दिव्य भावनाओं की पोषक स्नेह सलिला श्रद्धेया शैल जीजी ने शान्तिकुञ्ज में ध्वजारोहण किया। शान्तिकुञ्ज के सुरक्षा दस्तों सहित विविध समूहों ने राष्ट्रभक्ति से ओतप्रोत कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए माँ भारती को अपने श्रद्धा सुमन समर्पित किए। गायत्री विद्यापीठ के छात्र-छात्राओं द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी गईं। देशभक्ति गीतों, नृत्य व लघुनाटक ने उपस्थितजनों को भावविभोर कर दिया। इस अवसर पर सम्पूर्ण वातावरण राष्ट्रभक्ति, अपनी उदात्त संस्कृति और लोकमंगल के लिए त्याग, समर्पण के भाव से सराबोर दिखाई दिया। ध्वजारोहण समारोह में व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि सहित शान्तिकुञ्ज, देसंविवि परिवार और देश-विदेश से आये अनेक नर-नारी उपस्थित रहे।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और गायत्री विद्यापीठ में भी ध्वजारोहण समारोह आयोजित किये गए। ध्वजारोहण के पश्चात् विद्यार्थियों ने देशभक्ति से ओतप्रोत गीत, नृत्य, नुक्कड़ नाटक और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम करते हुए समारोह को जीवंत बना दिया था।

शान्तिकुञ्ज में 100फीट ऊँचे ध्वज का वंदन और पूर्व संध्या पर निकाली गई तिरंगा यात्रा का चैतन्य सिद्ध क्षेत्र में भव्य समापन

100 फीट ऊँचे तिरंगे का वंदन : स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर शान्तिकुञ्ज परिसर में 100 फुट ऊँचे तिरंगे का पूजन देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, महिला मंडल शान्तिकुञ्ज की संचालिका आदरणीया श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी और शान्तिकुञ्ज के व्यवस्थापक आदरणीय श्री योगेंद्र गिरी जी ने किया।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आयोजित ध्वजारोहण समारोह में दिखे राष्ट्रभक्ति के रंग

स्वतंत्रता दिवस पर शुभकामनाएँ एवं परिजनों के नाम संदेश

राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए हर व्यक्ति तक युग चेतना का विस्तार करें।

इन दिनों जब हम अखंड दीपक के प्राकट्य तथा परम वंदनीया माताजी के अवतरण की शताब्दी के विशेष उल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस मना रहे हैं, तब राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनर्निर्माण के हमारे संकल्प और भी प्रबल हो जाते हैं। आज राष्ट्र की स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए सर्वोच्च बलिदान देने वाले महापुरुषों और वीर जवानों के प्रति अपने भाव सुमन समर्पित करते हुए गुरुदेव-माताजी के शक्ति अनुदानों से नए भारत के निर्माण के लिए हर व्यक्ति तक युगचेतना के विस्तार का संकल्प लेने का अवसर है। - श्रद्धेया शैल जीजी

स्वतंत्रता दिवस अधिकारों की ही नहीं, उत्तरदायित्वों की भी याद दिलाता है।

स्वतंत्रता दिवस हमें अपने राजनीतिक अधिकारों के साथ राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों का स्मरण कराता है। यह हमें आत्मनिर्भरता, आत्मविकास और राष्ट्र के पुनर्निर्माण के लिए पूरे मनोयोग से समर्पित होने की प्रेरणा देता है। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी

चरित्र, कर्म और चेतना से राष्ट्र को गौरवान्वित करें।

हम सभी को स्वतंत्रता दिवस के पवित्र अवसर पर आत्मनिर्माण और राष्ट्रनिर्माण का संकल्प लेना चाहिए। मातृभूमि के प्रति प्रेम केवल भावना नहीं, बल्कि साधना, सेवा और सतत आत्म परिष्कार का संकल्प है। पूज्य गुरुदेव का कथन है, ''सच्चा देशभक्त वही है, जो अपने चरित्र, कर्म और चेतना से राष्ट्र को गौरवान्वित करे।''

-आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर कृष्ण भक्ति में डूबा शान्तिकुञ्ज परिवार

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व शांतिकुंज के मुख्य सभागार में उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया गया। देश-विदेश से आए हुए साधकों, शांतिकुंज परिवार एवं देवसंस्कृति विश्वविद्यालय परिवार ने भाग लेकर कृष्णमय वातावरण में डूबकर भक्ति का आनंद लिया।

अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुखद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैलदीदी ने अपने संदेश में कहा कि भगवान श्रीकृष्ण धर्म, कर्म और प्रेम से भर देने वाले दिव्य अवतार हैं। उनकी लीलाएं हमें जीवन के हर क्षेत्र में संतुलन, प्रेम और निष्ठा के साथ कार्य करने की प्रेरणा देती हैं। देवसंस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति और युवा आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि कृष्ण की भक्ति युवाओं को आत्मिक ऊर्जा देती है। आज की पीढ़ी यदि श्रीकृष्ण के आदर्शों को जीवन में उतार ले, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

इससे पूर्व कार्यक्रम की शुरूआत कृष्ण भक्ति से ओतप्रोत भजनों के साथ हुई, जिनमें उपस्थित जनसमूह झूम उठा। जन्माष्टमी पर्व के वैदिक कर्मकाण्डों का आयोजन भी विधिवत संपन्न हुआ। इस दौरान श्री श्याम बिहारी दुबे ने भगवान श्रीकृष्ण की विभिन्न लीलाओं, माखनचोरी, गोवर्धन लीला, रासलीला आदि का भावपूर्ण एवं जीवंत प्रस्तुतिकरण किया। पूरे शांतिकुंज परिसर में भक्ति, उल्लास और आध्यात्मिक ऊर्जा को अनुभव किया गया। सभी ने मिलकर नंद के घर आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की जैसे अनेक भजनों के साथ भगवान श्रीकृष्ण के अवतरण का स्वागत किया।

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व समारोह में भक्तिरस में डूबे शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी एवं शिविरार्थी साधकगण

'राष्ट्र प्रथम' के संकल्प के साथ

शान्तिकुञ्ज में हो रहा है नए सत्रों का शुभारंभ

वर्तमान में भारत एक संवेदनशील दौर से गुजर रहा है। सीमाओं पर स्थिति गंभीर है। देश को अपने नागरिकों की सजगता, समर्पण और संकल्प की आवश्यकता है। सीमा पर बढ़ते तनाव ने हमें एक बार फिर यह स्मरण कराया है कि राष्ट्र रक्षा केवल सीमा पर तैनात सैनिकों का दायित्व नहीं, बल्कि हर जागरूक नागरिक का धर्म है।

हमारा गायत्री परिवार सदैव से राष्ट्र निर्माण, सांस्कृतिक जागरण और जनचेतना का अग्रदूत रहा है। आज समय की पुकार है कि हम 'राष्ट्र प्रथम' के संकल्प को जीवन में उतारें। इस उद्देश्य से शांतिकुंज, हरिद्वार में एक विशेष प्रशिक्षण शिविर प्रारम्भ किया जा रहा है, जहाँ **सेना, अर्धसैनिक बलों एवं पुलिस सेवा से प्रशिक्षित विशेषज्ञों द्वारा शारीरिक, मानसिक एवं आपातकालीन स्थितियों से निपटने हेतु प्रशिक्षण दिया जाएगा।**

हमारा आह्वान है

- वे युवा परिजन जो राष्ट्र सेवा हेतु तत्पर हैं, आगे आएं।
- वे सृजन सैनिक जिनके हृदय में देश के लिए कुछ कर गुजरने की ललक है, वे आवेदन करें।
- वे परिजन जो पूर्व में सेना, पुलिस, अर्धसैनिक या सुरक्षा बलों में सेवा दे चुके हैं, कृपया इस अभियान से जुड़ें और मार्गदर्शन करें।

यह कोई युद्ध की तैयारी नहीं, यह शांति, आपातकालीन परिस्थितियों और सुरक्षा के लिए सजग प्रहरी बनने की साधना है। गायत्री परिवार का प्रत्येक सदस्य इस संकल्प में सहभागी बने, यही आज की सच्ची साधना और युगधर्म है।

इच्छुक परिजन कृपया शीघ्र पंजीकरण कराएँ

ई-मेल : apda.rastrarakhsa.prashikshan@awgp.org

धराली, उत्तरकाशी आपदा राहत हेतु भेजा राहत दल

5 अगस्त को उत्तराखंड के उत्तरकाशी जनपद के धराली क्षेत्र में बादल फटने से हुई भीषण त्रासदी सर्वविदित है। इस हृदय विदारक वेला में शान्तिकुञ्ज ने अपनी सहज संवेदनशीलता का अविलम्ब परिचय दिया। श्रद्धेया शैल जीजी की अध्यक्षता में शान्तिकुञ्ज आपदा प्रबंधन दल की बैठक हुई, जिसमें श्री इन्द्रजीत सिंह के नेतृत्व में आपदा राहत सर्वे एवं राहत दल का गठन कर उसे अगले ही दिन, 6 अगस्त को उत्तरकाशी के लिए रवाना किया गया।

बैठक में स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी ने घटना पर गहरा दुःख व्यक्त करते हुए सभी से पीड़ितों की सहायता के लिए उदारतापूर्वक आगे आने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि हम माँ गायत्री से प्रार्थना करते हैं कि हताहतों को शांति एवं शोकाकुल परिवारों को धैर्य प्रदान करें। संकट की इस घड़ी में शान्तिकुञ्ज आपदा प्रभावित परिवारों के साथ खड़ा रहेगा।

व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि ने कहा कि हम प्रशासन एवं परिजनों के सतत संपर्क में हैं। पीड़ितों की आवश्यकताओं का आकलन कर आवश्यकतानुसार सहायता पहुँचाई गई है और आगे भी पहुँचायी जायेगी।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.org
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.08.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26